TNF TODAY

टीएनएफ टुडे

थॉट्स न्यूज फैक्ट्स टुडे

tnftoday | tnftoday

www.tnftoday.com / epaper | Trial Edition | आखिर कब बदलेगा आम आदमी का सिस्टम? (पेज-3) | पृष्ठ- 08 | वर्ष-01 अंक-4 | मूल्य ₹7 | बुधवार | दिनांक- 01.07.2026

गोवर्धन की तलहटी में उमड़ेगी पहाड़ जैसी आस्था

जगप्रसिद्ध मुड़िया मेला 22 जुलाई से 29 जुलाई तक होगा आयोजित, देश-दुनिया से श्रद्धालु आएंगे गिरिराज जी की नगरी, परिक्रमा मार्ग पर बनेगी मानव श्रृंखला

टीएनएफ टुडे, मथुरा।

टीएनएफ टुडे impect

गोवर्धन में मुड़िया पूर्णिमा मेला उत्तर प्रदेश, भारत में मथुरा के पास स्थित गोवर्धन शहर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है। यह सात दिवसीय मेला है जो गुरु पूर्णिमा पर समाप्त होता है, जो संत सनातन गोस्वामी के तिरोधान दिवस का प्रतीक है। मुडिया मेला ब्रज भूमि के सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहारों में से एक है। हर साल की तरह ही इस वर्ष भी ये मेला 22 जुलाई 29 जुलाई तक आयोजित होगा। यह भव्य धार्मिक आयोजन पवित्र आषाढ़ पूर्णिमा को मनाया जाता है, जिसे गुरु पूर्णिमा के रूप मंल भी जाना जाता है, और लोग इसे जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षण मानते हैं। आप अक्सर पवित्र गोवर्धन परिक्रमा के बारे में सुनते होंगे, जिसमें तीर्थयात्री पहाड़ियों की परिक्रमा करते हैं और सच्चे मन से भगवान कृष्ण और गिरिराज महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करने की आशा करते हैं। इस मेले के प्रति आस्था का दायरा समूचे ब्रज में परिलक्षित होता है। मान्यता है कि इस उत्सव की गहरी ऐतिहासिक जड़ें श्री सनातन गोस्वामी से जुड़ी हैं। साथ ही मुंडन की परंपरा से भी, जिसमें सिर मुंडवाना भक्ति और समर्पण का प्रतीक माना जाता है। मेले के दौरान, जीवंत भजन, कीर्तन, आध्यात्मिक चचाएँ और पवित्र अनुष्ठान होते हैं, जिससे यह महज एक मेला नहीं, बल्कि एक दिव्य वातावरण जैसा लगता है। सरल शब्दों में कहें तो, मुड़िया पूर्णिमा मेला ब्रज की समृद्ध धार्मिक विरासत को करीब से अनुभव करने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान करता है।

यह त्योहार भगवान कृष्ण के अनुयायियों के लिए अत्यंत आध्यात्मिक महत्व रखता है। गौड़ीय वैष्णव परंपरा के सबसे पूजनीय संतों में से एक श्री सनातन गोस्वामी से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है । मेले के दौरान, गोवर्धन क्षेत्र भक्ति का एक जीवंत केंद्र बन जाता है। जहां पूरे क्षेत्र में निरंतर भजन, कीर्तन, सत्संग, मंदिर दर्शन और धार्मिक जुलूस निकलते रहते हैं। चूंकि गुरु पूर्णिमा से कई दिन पहले ही लाखों तीर्थयात्री आने लगते हैं, इसलिए उत्सव और धार्मिक गतिविधियां मुख्य त्योहार की तारीख से आगे तक जारी रहती हैं, जिससे गोवर्धन, मथुरा और वृंदावन में एक अनूठा आध्यात्मिक वातावरण बनता है। इस सात दिवसीय मेले में गिरिराज महाराज की परिक्रमा के लिए लाखों श्रद्धालुओं जुटेंगे।

आस्था और श्रद्धा के अनूठे रूप-स्वरूप और परिदृश्य कर देंगे चमत्कृत और झंकृत

प्रशासन के लिए चुनौती भरा होता है ये आयोजन, तमाम विभाग संभालते हैं अपनी-अपनी जिम्मेदारी

प्रशासन ने तैयारियां शुरू कीं

इस भव्य और दिव्य आयोजन के लिए प्रशासन ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। बिजली, स्वास्थ्य, परिवहन विभागों ने अपनी तैयारियां कर ली हैं। पूरे मेला क्षेत्र को सेक्टरों में बांटकर मजिस्ट्रेटों की ड्यूटी लगाई जाएगी। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए स्थानीय निकाय भी जुट गए हैं।

आलोकित मंदिर, सजते प्रभु

शाम ढलते ही गिरिराजजी के मंदिर दीपों और लाइटों से ऐसे दमक उठते हैं जैसे स्वर्ग का सौंदर्य धरती पर उतर आया हो। हीरे-मोती की पोशाक में सजे प्रभु मुकुट मुखारबिंद, दानघाटी, जतीपुरा मंदिरों में दर्शन देते हुए भक्तों को अभिभूत करते हैं। अपलक नेत्रों से प्रभु की मुस्कान निहारते श्रद्धालु अपने आप को धन्य मानते हैं। मुकुट मुखारबिंद, दानघाटी और जतीपुरा मुखारबिंद मंदिरों पर दूध की धाराएं बहती हैं। 21 किमी का परिक्रमा मार्ग भक्ति की महक से सराबोर रहता है। श्रद्धालुओं की संख्या और उमंग देख भक्ति में मस्ती समाहित हो जाती है। श्रद्धालु जब तलहटी में दंडवत होते हैं और ब्रजरज मस्तक पर सजाते हैं, तो हर चेहरा प्रभु के चरणों में अर्पित नजर आता है। मुड़िया पूर्णिमा मेला सिर्फ आयोजन नहीं, बल्कि भावों की तीर्थयात्रा है। सूर्यदेव का ताप भी नंगे पैरों को नहीं रोक पाता।

इस आयोजन के दौरान नहीं होगा कोई वीआइपी

ब्रज में वीआइपी की आमद बनी रहती है। सभी प्रमुख मंदिरों में आए दिन ही कोई न कोई वीआइपी दर्शन करने आता है। इसके लिए प्रशासन को व्यवस्था करनी पड़ती है। गोवर्धन के मुडिया मेला के दौरान किसी भी अतिथि को वीआइपी की सुविधा नहीं दी जाती। प्रशासन ऐसे में स्पष्ट कर देता है कि आयोजन के लिए किसी को भी वीआइपी सुविधा देना संभव नहीं है।

ब्रज में फिर उमड़ेगी आस्था की बयार

अधिकमास के दौरान ब्रज चौरासी कोस में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ी रही।वृंदावन, गोवर्धन, बरसाना आदि तीर्थस्थलों पर भी श्रद्धा उमड़ती रही। एक महीने की आध्यात्मिक रौनक के बाद अब फिर मुडिया मेला में चहुंओर राधे-राधे की गूंज होती रहेगी। सभी प्रमुख मंदिरों में श्रद्धालु आएंगे। इस आयोजन के लिए होटल, गेस्टहाउस, धर्मशालाएं बुक होने लगी हैं।

अवैध प्रवासन, मानव तस्करी और फर्जी एजेंटों के खिलाफ जयशंकर ने दिखाया कड़ा रुख, दुनिया को चेताया

एजेंसी, नई दिल्ली।

नई दिल्ली में आयोजित मानव संसाधन गतिशीलता मंच को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा कि आज दुनिया तेजी से बदल रही है और इस बदलती व्यवस्था में कौशल आधारित मानव संसाधन की वैश्विक मांग लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि जनसंख्यिकीय बदलाव, तकनीकी नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, डिजिटलीकरण और हरित अर्थव्यवस्था जैसी नई प्रवृत्तियां वैश्विक श्रम बाजार को नया स्वरूप दे रही हैं। इसके साथ ही स्वास्थ्य, विनिर्माण, निर्माण और कृषि जैसे पारंपरिक क्षेत्रों में भी कुशल मानव संसाधन की आवश्यकता बनी हुई है। ऐसे समय में देशों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह रचनात्मक सोच और सहयोग के माध्यम से भविष्य की समृद्धि सुनिश्चित करें।

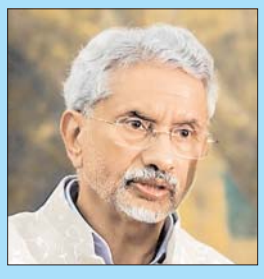

जयशंकर ने कहा कि भारत की दृष्टि केवल विदेशों में रोजगार उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत मानव संसाधन गतिशीलता को अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक महत्वपूर्ण स्तंभ मानता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की साझेदारियां पारस्परिक लाभ, साझा जिम्मेदारी और दीर्घकालिक स्थिरता पर आधारित होती हैं। यदि इन्हें प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए तो इससे स्रोत देशों, गंतव्य देशों, नियोक्ताओं, श्रमिकों और समाज सभी को लाभ मिलता है।

योगी सरकार ने 15.26 करोड़ से संवारा ऐतिहासिक कैलाश मंदिर

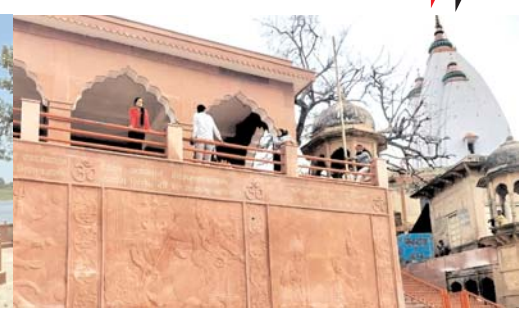

रेड सैंड स्टोन के घाट और म्यूरल आर्ट्स से भव्य हुआ मंदिर परिसर

टीएनएफ टुडे, आगरा।

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार प्रदेश में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने और पौराणिक धरोहरों के जीर्णोद्धार के लिए वृहद स्तर पर कार्य कर रही है। इसी कड़ी में ताजनगरी आगरा में यमुना नदी के तट पर स्थित अति प्राचीन कैलाश महादेव मंदिर का 15.26 करोड़ रुपये की लागत से सुंदरीकरण कराया गया है।

दो चरणों में हुए इस विकास कार्य के बाद अब मंदिर का स्वरूप पूरी तरह निखर गया है। विशेषकर भव्य रिवर फ्रंट के निर्माण से मंदिर की सुंदरता कई गुना बढ़ गई है। यमुना तट पर स्थापित भगवान शिव के डमरू की विशालकाय प्रतिकृति यहां आने वाले श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर रही है, जहां सुबह और शाम के समय एक अद्भुत रौनक देखने को मिलती है।

रेड सैंड स्टोन के घाट और म्यूरल आर्ट्स से भव्य हुआ मंदिर परिसर

उ.प्र. पर्यटन द्वारा प्रथम चरण में करीब चार करोड़ रुपये की लागत से मंदिर को जाने वाले मार्ग पर एक भव्य गेट और यमुना तट पर घाट का निर्माण कराया गया था। दूसरे चरण में यहां व्यापक सुंदरीकरण किया गया है। यहां रेड सैंड स्टोन से शानदार घाट और सीढ़ियां बनाई गई हैं। श्रद्धालुओं के सुगम आवागमन के लिए पाथवे, यमुना निहारने के लिए दर्शन डेक और पवेलियन बनाए गए हैं। दीवारों पर म्यूरल आर्ट्स के माध्यम से भगवान शिव और श्रीकृष्ण की मनमोहक लीलाएं उकेरी गई हैं। इनमें कालिया नाग मर्दन, बांसुरी वादन, अर्जुन को विराट स्वरूप, शिव-पार्वती का तांडव नृत्य और शिवलिंग की पूजा करते भगवान परशुराम व महर्षि जमदग्नि के भित्ति चित्र (म्यूरल) शामिल हैं। यमुना किनारे लगी रेड सैंड स्टोन की जाली अद्भुत छटा बिखेर रही है। वर्तमान में रास्ते पर कोबल स्टोन बिछाने और विद्युतीकरण का कार्य अंतिम दौर में है, जो अगले 10-12 दिनों में पूरा हो जाएगा।

एक ही जलहरी में विराजमान हैं दो शिवलिंग

द्वापर युग का यह कैलाश महादेव मंदिर अपने आप में बेहद अनूठा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां एक ही जलहरी में दो शिवलिंग विराजमान हैं। मान्यता है कि इनकी स्थापना भगवान परशुराम और उनके पिता महर्षि जमदग्नि ने की थी। सावन माह के तीसरे सोमवार को कैलाश महादेव मंदिर पर विशाल और ऐतिहासिक मेला लगता है, जिसके चलते आगरा में स्थानीय अवकाश रहता है। शहर के चारों कोनों पर विराजमान भगवान शिव के चार प्रमुख मंदिरों- कैलाश, बल्केश्वर, राजेश्वर और पृथ्वीनाथ में से यह आस्था का एक प्रमुख केंद्र है।

धार्मिक पर्यटन को मिल रही है नई उड़ानः पर्यटन मंत्री

यूपी के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में प्रदेश सरकार तीर्थ स्थलों और सांस्कृतिक धरोहरों के विकास के लिए कृतसंकल्पित है। आगरा के ऐतिहासिक कैलाश मंदिर का कायाकल्प हमारी इसी प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण है। 15.26 करोड़ की इस परियोजना से न केवल मंदिर की पौराणिकता को संरक्षित किया गया है, बल्कि आधुनिक सुविधाओं के साथ एक शानदार रिवर फ्रंट भी विकसित किया गया है। इससे आगरा में धार्मिक पर्यटन को नई उड़ान मिलेगी और श्रद्धालुओं को उत्कृष्ट सुविधाएं प्राप्त होंगी।

भूख हड़ताल कर रहे वांगचुक की तबीयत बिगड़ी

नई दिल्ली। नीट पेपर लीक के विरोध में कॉकरोच जनता पार्टी का 11वें दिन भी जंतर-मंतर पर प्रदर्शन जारी है। इसी बीच वहां तीन दिनों से भूख हड़ताल कर रहे लद्दाख के एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक की मंगलवार को तबीयत बिगड़ गई।आंदोलन के आयोजकों ने बताया कि वांगचुक का ब्लड शुगर स्तर घटकर 66 पर पहुंच गया है, जो सामान्य से कम माना जाता है। वांगचुक 28 जून से भूख हड़ताल कर रहे हैं। वह शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं।

वहीं सीजेपी फाउंडर अभिजीत दीपके ने आरोप लगाया कि जंतर-मंतर पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। समर्थकों और पार्टी के सदस्यों को प्रदर्शन स्थल तक पहुंचने से रोका जा रहा है। कुछ लोगों को पहचान पत्र नहीं होने के कारण प्रवेश नहीं दिया गया।

दुनिया में सबसे पहले की थी गर्भस्थ शिशु की किडनी में कैंसर की खोज

टीएनएफ टुडे, आगरा।

- एसएन मेडिकल कालेज आगरा के पूर्व माइक्रोबायोलॉजी अध्यक्ष डा. बी एम अग्रवाल ने अपनी प्रतिभा से चौंकाए थे दुनिया भर के विशेषज्ञ
- वर्ष 1978 में की थी खोज, तब डायग्नोसिस के नहीं थे उच्च स्तरीय संसाधन
- ट्रेन से दिल्ली जाकर एम्स की लाइब्रेरी से खंगाले थे खोजपरक तथ्य

एसएन मेडिकल कालेज, आगरा के पूर्व माइक्रोबायोलॉजी विभागाध्यक्ष डा. बी एम अग्रवाल ने गर्भस्थ शिशु की दोनों किडनियों में कैंसर की खोज 47 वर्ष पहले यानी 1978 में ही कर ली थी। ये खोज उस समय दुनिया में सबसे पहले की थी। डा. अग्रवाल तब मेडिकल कालेज की पैथोलॉजी विभाग में कार्यरत थे। तब माइक्रोबायोलॉजी सेक्शन पैथोलॉजी विभाग का एक सूक्ष्म अंग हुआ करता था। बाद माइक्रोबायोलॉजी विभाग सृजित हुआ और वे पहले विभागाध्यक्ष बनाए गए थे। गर्भस्थ शिशु की दोनों किडनियों में कैंसर का पता लगने की कहानी किवदंती नहीं बल्कि प्रमाण सहित है।

ये वर्ष 1978 की बात है। एसएन मेडिकल कालेज,आगरा में एक गर्भवती महिला स्त्री रोग विभाग में परीक्षण कराने आई थी। उसका पेट अप्रत्याशित रूप से बहुत फूला हुआ था। प्रथम दृष्टया देखने से ही पता चल रहा था कि ये स्थिति गर्भस्थ शिशु के असामान्य आकार के कारण है। तब जांच के लिए आज की तरह अल्ट्रासाउंड, सीटी स्कैन और यहां तक एक्स-रे की भी सुविधा नहीं थी। गर्भस्थ शिशु की मृत्यु हो गई थी। शिशु का पेट अकल्पनीय रूप से बड़े आकार का था। डा. अग्रवाल बताते हैं कि स्त्री रोग विभागाध्यक्ष ने ये केस उन्हें रेफर किया। मैंने शिशु के शव की ऑटोप्सी कराई।

ऑटोप्सी शव के परीक्षण के लिए एक ऐसी शल्य क्रिया होती है जिसमें मृत्यु के कारण का स्पष्टता से पता चल जाता है। मसलन, किस बीमारी से मृत्यु हुई। घटना-दुर्घटना या अन्य किसी परिस्थितिवश मृत्यु होने पर पोस्टमार्टम कराया जाता है, लेकिन, इसमें आमतौर पर चोट आदि के निशान, गोली लगने के निशान या जहर सेवन से मृत्यु के कारण को देखा जाता है। लेकिन, ऑटोप्सी में पता लगाया जाता है कि मृत्यु किन कारणों और किन तरीकों से हुई। पोस्टमार्टम में मृत्यु का कारण स्पष्ट न होने पर बिसरा सुरक्षित रख लिया जाता है और फोरेंसिक लैब में इसकी जांच कराई जाती है।

डा. अग्रवाल बताते हैं कि ऑटोप्सी के दौरान गर्भस्थ शिशु की दोनों किडनियां सामान्य से करीब आठ गुना बढ़े आकार की पाई गईं। पेट फूलने का यही एकमात्र कारण था। दोनों किडनी में गांठें ही गांठें थीं। ये गांठें कैंसर की थीं। डा. अग्रवाल बताते हैं कि उस दौरान चिकित्सा विज्ञान आज की तरह तकनीकी रूप से उतना सुदृढ़ नहीं था। इस प्रकरण में जांच और परीक्षण के लिए सिवाय अनुभव ही एकमात्र रास्ता था। गर्भस्थ शिशु की किडनी में कैंसर का पाया जाना उस समय के लिए एक चौंकाने वाली बात थी। खासतौर पर पूरे चिकित्सा जगत के लिए। अब एक चुनौती सामने थी। इस तरह का कोई केस पहले भी कभी संज्ञान में आ चुका है? ये जानने के लिए चिकित्सा विज्ञान के जर्नल्स का अध्ययन करना जरूरी था। आगरा में तो इसके लिए कोई संसाधन था ही नहीं। हां, दिल्ली में एम्स के पास मेडिकल लाइब्रेरी थी। मामूली वेतन, आवागमन के सीमित संसाधन और समय की व्यस्तता। खैर, मामला जितना पेचीदा था, उतना ही चुनौतीपूर्ण। डा. अग्रवाल बताते हैं कि वे आगरा छावनी स्टेशन से आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस(एपी एक्सप्रेस) में बैठते। दिल्ली पहुंच मेडिकल लाइब्रेरी पहुंचते। वहां जर्नल का अध्ययन करते। कई दिनों तक यही शैडयूल रहा। दो दर्जन से ज्यादा जर्नल्स के अध्ययन के बाद नोट्स तैयार किए। इस अध्ययन से ये भी स्पष्ट हो गया था कि तब तक इस तरह का कोई केस चिकित्सा जगत के संज्ञान में नहीं आया था। यानी, आगरा के एसएन मेडिकल कालेज में उनके द्वारा परीक्षण किया गया ये केस अपने आप में अनूठा और पहला था। पूरी तरह से आत्मविश्वास हो जाने पर डा. अग्रवाल ने इस स्टडी को प्रकाशन के लिए एक ब्रिटिश जर्नल के लिए भेज दिया। अपार खुशी तब हुई,जब उनकी स्टडी इस जर्नल में वर्ष 1979 में प्रकाशित हो गई। ये स्टडी तब दुनिया में पहली और अनूठी थी।

इस जर्नल में हुआ था प्रकाशन

ब्रिटिश जर्नल आफ यूरोलॉजी विद डायग्नोसिस आफ विम्स ट्यूमर विद पॉली सिस्टक किडनी। ये विश्व चिकित्सा जगत में पहली केस रिपोर्ट थी।

सबसे बड़ा सवाल, कोख में शिशु को कैंसर हुआ क्यों और कैसे

डा. अग्रवाल ने बताया कि कोख में शिशु की दोनों किडनियों में कैंसर होना तब चिकित्सा जगत के लिए बहुत चौंकाने वाली बात थी। चूंकि शिशु को कैंसर होने का मतलब था कि गर्भधारण से लेकर गर्भावस्था के दौरान तक कोई न कोई कारण रहा होगा। ये कारण, जेनेटिक हो सकता था, या पिता या माता के शरीर में विकृति के कारण भी। ये पता लगाने के लिए जेनेटिक हिस्ट्री जरूरी थी लेकिन, तब न तो इसके लिए संसाधन थे और न ही माता-पिता इसके लिए तैयार थे। उन्हें समझाया भी गया कि अगले इश्यू को इस तरह की कोई शारीरिक परेशानी न हो, इसके लिए परीक्षण और बचाव जरूरी है। लेकिन, ये संभव नहीं हो सका। इसके साथ ही ये सवाल भी सवाल ही रह गया कि आखिर, गर्भस्थ शिशु की दोनों किडनियों में इतना गंभीर कैंसर कैसे हो गया? आमतौर पर कैंसर के विभिन्न चरण पूरे होने में वर्षों लग जाते हैं लेकिन, शिशु तो मात्र नौ महीने का ही था।

डा. बी एम अग्रवाल के नाम उपलब्धियों की लंबी कतार है

- एसएन मेडिकल कालेज आगरा में 1986 में माइक्रोबायोलॉजी विभाग की स्थापना हुई। वे इसके संस्थापक थे। 18 वर्षों तक वे विभागाध्यक्ष के साथ ही टीचिंग, ट्रेनिंग और रिसर्च वर्क के इकलौते व्यक्तित्व रहे।
- 1994 में डब्ल्यूएचओ ने उन्हें फैलोशिप दी। इसके तहत यूके और अमेरिका में छह महीने तक अध्ययन और रिसर्च का अवसर मिला। ये उपलब्धि अब तक राज्य मेडिकल कालेजों में उनके ही नाम है।
- वर्ष 1994 में इंटरनेशनल ऑटोमिक इनर्जी एजेंसी (आईएईए)आस्ट्रिया वियाना यूएनओ ने मॉलीक्यूलियर टेक्नोलॉजी फॉर डायग्नॉसिस आफ माइक्रोबैक्टीरियम के लिए ग्रांट दी थी। ये ग्रांट दुनिया के सात देशों के विशेषज्ञों को दी गई थी, जिसमें भारत भी एक था।
- डा. अग्रवाल के कार्यकाल के दौरान एसएन मेडिकल कालेज, आगरा का माइक्रोबायोलॉजी विभाग देश के शीर्ष 14 संस्थानों में शुमार था। ये प्रमाण नेशनल इंस्टीटयूट आफ बायोलॉजिकल ने दिया था।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल में 72 रिसर्च पेपर प्रकाशित हो चुके हैं।
- यूपी स्टेट मेडिकल कालेज की ओर से डा. अग्रवाल पहले विशेषज्ञ हैं जो डीएनबी एक्जामनर बनाया गया।

जगन गुर्जर और चंबल का नया 'बागी' इतिहास

राजनीति, न्याय व्यवस्था और बीहड़ के नए समीकरण

● टीएनएफ टुडे विशेष

चंबल के बीहड़ों का इतिहास हमेशा से सामाजिक अन्याय, जातिगत गौरव और व्यवस्था से विद्रोह की कहानियों से भरा रहा है। लेकिन जून 2026 में अजमेर की हाई-सिक्योरिटी जेल में डकैत जगन गुर्जर के अंत के साथ ही चंबल के 'बागी' चरित्र का एक ऐसा अध्याय बंद हुआ है, जो पारंपरिक डकैतों से बिल्कुल जुदा था। जगन गुर्जर कोई पारंपरिक विद्रोही नहीं था, बल्कि वह आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था, राजनेताओं और कानून के लचीलेपन का लाभ उठाने वाला एक चतुर प्रतिनिधि था।

चंबल के पुराने डाकू एक बार 'बागी' होने के बाद कानून की नजरों में सीधे दुश्मन होते थे। इसके विपरीत, जगन गुर्जर का चरित्र बहुआयामी था। वह अपराध करता, बीहड़ में जाता, और जब पुलिस का दबाव बढ़ता, तो वह कानून या किसी बड़े राजनीतिक चेहरे को ढाल बनाकर 'क्रोनोलॉजी के तहत आत्मसमर्पण' कर देता था। 2001 में पुलिस के सामने, 2009 में कांग्रेस नेता सचिन पायलट की मौजूदगी में, और 2018 में फिर आईजी के सामने उसका समर्पण यह साबित करता है कि उसने समर्पण को प्रायश्चित नहीं, बल्कि एक 'सुरक्षा कवच' (सेफ एग्जिट) की तरह इस्तेमाल किया?

जगन का इतिहास बताता है कि वह केवल अपनी बंदूक के दम पर नहीं, बल्कि नेताओं की जरूरत बनकर जी रहा था। 2008 के गुर्जर आरक्षण आंदोलन के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के महल को उड़ाने की धमकी देना और बाद में राजनीतिक रैलियों और मंचों के आसपास उसकी सक्रियता महज इत्तेफाक नहीं थी। उसने अपनी पहली पत्नी ममता गुर्जर को उपचुनाव तक लड़वाया। यह इस बात का प्रमाण है कि बीहड़ का यह रास्ता सीधे सत्ता के गलियारों में दखल रखने के लिए तैयार किया गया था। वह नेताओं के लिए वोट बैंक साधने और डराने का एक सशक्त 'प्रतिनिधि' बन चुका था।

जगन पर 100 से अधिक संगीन मामले दर्ज थे, लेकिन खौफ के कारण गवाहों का मुकर जाना और बार-बार पैरोल या जमानत पर बाहर आ जाना, हमारी कानूनी और प्रशासनिक व्यवस्था की विफलता को दशार्ता है। जेल से बाहर आते ही वह फिर ?3 के मामूली विवाद पर सरेआम बाजार में व्यापारियों को पीट देता था और महिलाओं को अपमानित करता था। यह दशार्ता है कि उसे न तो कानून का डर था और न ही सुधार की कोई गुंजाइश। बेटी की शादी में अपराध छोड़ने की कसम खाना और फिर हथियार उठा लेना यह सिद्ध करता है कि उसका समर्पण केवल एक रणनीतिक

विराम था, आत्मसमर्पण नहीं।

यदि चंबल के इस नए दौर पर इतिहास लिखा जाएगा, तो वह 'रोबिनहुड' जैसी छवि वाले डाकुओं का नहीं, बल्कि "सिंडिकेट अपराध" का इतिहास होगा। जगन गुर्जर का जीवन और उसकी जेल के भीतर हुई संदिग्ध हत्या यह साफ करती है कि जब कोई मोहरा अपनी उपयोगिता खो देता है या व्यवस्था के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द बन जाता है, तो उसका अंत भी उसी व्यवस्था के भीतर ही तय कर दिया जाता है। जगन का अंत चंबल के पुराने बागियों की तरह पुलिस की गोली से जंगल में नहीं, बल्कि कानून की सबसे सुरक्षित कही जाने वाली जेल की कोठरी में हुआ—जो इस नए 'बागी इतिहास' का सबसे बड़ा और कड़वा सच है।

जगन गुर्जर का चरित्र पारंपरिक चंबल के बागियों से पूरी तरह भिन्न था, क्योंकि वह केवल जंगलों का डकैत नहीं बल्कि खाकी, खादी और न्याय प्रणाली के बीच झूलती एक 'राजनैतिक व्यवस्था का मोहरा और प्रतिनिधि' बनकर उभरा। जहां चंबल के पुराने डकैत (जैसे मान सिंह या पान सिंह तोमर) एक बार बीहड़ में उतरने के बाद कभी आत्मसमर्पण की शर्तों या कानूनी छिद्रों का लाभ उठाकर बार-बार समाज में नहीं लौटे, वहीं जगन का "वार, समर्पण, पैरोल और फिर हथियार उठाना" न्याय व्यवस्था और राजनीति के गठजोड़ पर एक गहरा कटाक्ष है।

जगन डकेत वागी नहीं कुछ और था.....

एक साधारण दूधिया से डकैत बना जगन, मूल रूप से धौलपुर, राजस्थान का रहने वाला था । जानकारों और पत्रकारों के अनुसार, वह जन्मजात पेशेवर अपराधी नहीं था, बल्कि परिस्थितियों ने उसे उस राह पर धकेला । वह अक्सर अपनी बात मनवाने के लिए या निजी जरूरतों के लिए वारदातें अंजाम देता था ।

वसुंधरा राजे को धमकी और 'हीरो' बनना

जगन का नाम तब पूरे देश में चर्चा में आया, जब उसने 2008 के गुर्जर आरक्षण आंदोलन के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के धौलपुर महल को बम से उड़ाने की धमकी दी थी । इस धमकी ने उसे अपराध की दुनिया में रातों-रात चर्चा का केंद्र बना दिया ।

यूपी-राजस्थान पुलिस का दबाव और इनाम

राजस्थान पुलिस के भारी दबाव और लगातार अभियानों के कारण, उसे उत्तर प्रदेश के बीहड़ों और जंगलों में छिपकर शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा । उसके खौफ और अपराधों के कारण डीआईजी (आगरा) ने उस पर 50,000 का इनाम भी घोषित किया था। बाद में अन्य राज्यों की पुलिस ने इस इनाम को बढ़ाकर 11 लाख तक कर दिया था।

जगन इकलौता ऐसा डकैत था जिसके एनकाउंटर की मांग तक देश की संसद में उठाई गई थी। अंततः, पुलिस के एनकाउंटर से बचने वाला यह खूंखार अपराधी जून 2026 में अजमेर की सुरक्षित जेल में अपने ही बैरक में एक साथी कैदी (विष्णु गुर्जर) के हाथों मारा गया।

चार महीने के लिए खर्च किए 75 लाख रुपये, पोइया पर बनाया गया पांटून पुल अब हटाया जाएगा

❍ टीएनएफ टुडे, आगरा।

मानसून और संभावित बाढ़ को देखते हुए दयालबाग के पोइया घाट पर बना पांटून पुल हटा दिया गया, जिससे आवागमन बंद हो गया। पुल पर करीब 75 लाख रुपये खर्च होने के बाद चार महीने में हटाए जाने को लेकर सरकारी धन की बबार्दी के आरोप भी लगाए गए हैं।

आगरा के दयालबाग स्थित पोइया घाट यमुना नदी पर बने पांटून पुल से चार महीने में 75 लाख रुपये पानी में बह गए। सोमवार को पुल उखाड़ लिया गया। इससे आवागमन बंद हो गया। दिनभर वाहन लौटते रहे। राहगीर जब पुल पर पहुंचे तो उन्हें पट्टे निकले मिले। उन्हें वैकल्पिक मार्गों से गंतव्य तक सफर तय करना पड़ा।

लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता एनके यादव का कहना है कि मानसून में बाढ़ नियंत्रण के लिए पुल को हटाया जा रहा है। पांटून पुल अस्थायी रूप से बनाया गया था। इधर, पुल के नाम पर बाबरपुर निवासी भगवान सिंह ने पीडब्ल्यूडी अधिकारियों पर सरकारी धन की बबार्दी के आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि 75 लाख रुपये चार महीने में पानी में बह गए। हालांकि यहां सेतु निगम ने पक्के पुल का प्रस्ताव भी बनाया है लेकिन इसका निर्माण कब होगा, यह फिलहाल तय नहीं।

लोक निर्माण विभाग निर्माण खंड-2 ने फरवरी में इस पुल बनाया था। पीपों पर तख्ते लगाए थे लेकिन पुल पर राहगीरों की मुश्किलें लगातार बनी रहीं। चार महीने में कई बार पुल के पट्टे उखड़ गए। जाम के हालात बने। इसके मदेनजर पीडब्ल्यूडी ने यहां सूर्यास्त के बाद आवागमन प्रतिबंधित कर रखा था। भारी वाहनों पर भी रोक लगाई थी। जन प्रहरी संस्था संयोजक नरोत्तम सिंह का कहना है कि बटेश्वर, कैंजरा, पिनाहट सहित विभिन्न नदियों पर पांटून पुल के नाम पर पीडब्ल्यूडी हर साल करोड़ों रुपये पानी में बहा रहा है।

दस साल में 20 करोड़ से अधिक खर्च हो चुके हैं। पुल बनाने और हटाने के नाम पर हर साल भ्रष्टाचार हो रहा है।

'लोकमाता' अहिल्याबाई से सुशासन सीख रही सरकार, ओम बिरला बोले- 300 साल पुरानी व्यवस्था आज भी प्रेरणा

❍ टीएनएफ टुडे, आगरा।

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की 301वीं जयंती के उपलक्ष्य में मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने एत्मादपुर के मॉडल स्कूल परिसर में प्रतिमा का अनावरण किया। इस मौके पर जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई के शासन और न्याय व्यवस्था से प्रेरणा लेकर सरकार काम कर रही है। लोकमाता का जीवन जनकल्याण और सनातन के साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए समर्पित रहा।

लोकसभा अध्यक्ष ने लोकमाता के जीवन की कठिन परिस्थितियों के बाद भी उनकी दूरदर्शिता और धैर्य को याद किया। कहा कि 300 साल पहले उनका शासन-प्रशासन और न्याय व्यवस्था सुशासन की प्रतीक थी, जो अब की सरकार को प्रेरित करती है। उन्होंने मंदिरों, तीर्थस्थलों और धरोहरों का पुनर्निर्माण कराया, जिससे पूरा देश अब भी उन्हें श्रद्धा और सम्मान के साथ याद करता है।

केंद्रीय मंत्री एसपी सिंह बघेल ने कहा कि अहिल्याबाई होल्कर ने 12,776 मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया। कश्मीर से कन्या कुमारी तक धर्मशालाओं, कुएं बनाने का कार्य किया। वह नारी सशक्तीकरण की मिसाल हैं। केंद्र और राज्य सरकार ने लोकमाता के योगदान को सम्मान देते हुए उनके नाम पर विभिन्न संस्थानों का नामकरण किया है।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में महाराष्ट्र के कृषि मंत्री दत्तात्रेय भारणे, राज्यसभा सांसद नवीन जैन, रामराव वडकुते, विधायक पूजा पाल, राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. बबीता सिंह चौहान, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. मंजू भदौरिया, विधायक चौ. बाबूलाल, डॉ. जीएस धर्मेश, पुरुषोत्तम खंडेलवाल, डॉ. धर्मपाल सिंह, भगवान सिंह कुशवाह, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत पौनिया, महानगर अध्यक्ष राजकुमार गुप्ता, पूर्व विधायक गुटियारी लाल दुबेश, दिगंबर सिंह धाकरे आदि मौजूद रहे।

महारानी के लिए सिंहासन चाहिए, लोकमाता के लिए जनविश्वास

विशिष्ट अतिथि महाराष्ट्र विधान परिषद के सभापति प्रो. राम शिंदे ने प्रतिमा अनावरण के बाद कहा कि महारानी बनने के लिए सिंहासन चाहिए लेकिन लोकमाता बनने के लिए करोड़ों लोगों का विश्वास चाहिए। जैसे भगवान राम अयोध्या के नहीं पूरे देश के हैं, भगवान कृष्ण मथुरा के नहीं, शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के नहीं संपूर्ण देश के हैं, इसी प्रकार लोकमाता मालवा की नहीं पूरे देश की लोकमाता हैं।

बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाएं, तब बदलेगा समाज

प्रो. बघेल ने समाज के लोगों से कहा कि अपने बच्चों की बेहतर शिक्षा पर विशेष ध्यान दें। गणित और अंग्रेजी की पढ़ाई को वर्तमान समय की जरूरत बताते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं और रोजगार में सफलता दिला सकती है। डिग्री प्राप्त करने के बजाय रोजगारपरक एवं कौशल आधारित शिक्षा अपनाने की सलाह दी। साथ ही उन्होंने चिकित्सकों, प्रशासनिक अधिकारियों और अन्य जिम्मेदार पदों पर कार्यरत समाज के लोगों से आग्रह किया कि वे समाज के जरूरतमंद लोगों की यथासंभव सहायता करें।

हेमलता से दीप्ति तक...आगरा की बेटियों को मिला ओलंपिक का आसमान, अब मेडल पर नजर

❍ टीएनएफ टुडे, आगरा।

महिला टी-20 विश्वकप में उम्मीदों के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाने के बावजूद भारतीय महिला क्रिकेट टीम के लिए सोमवार को बड़ी खुशखबरी आई। लॉस एंजिलिस ओलंपिक-2028 में क्रिकेट की वापसी के लिए तय क्वालिफिकेशन प्रणाली के तहत भारतीय महिला टीम ने ओलंपिक के लिए जगह पक्की कर ली है। इससे भारतीय महिला क्रिकेट के सामने अब विश्वकप के साथ ओलंपिक पदक जीतने का भी सपना साकार करने का अवसर होगा।

शहर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाली पूर्व खिलाड़ियों और युवा क्रिकेटरों का मानना है कि यह भारतीय महिला क्रिकेट के लिए एक नए युग की शुरूआत है। क्रिकेट की 128 वर्ष बाद ओलंपिक में वापसी अपने आप में ऐतिहासिक है। शहर ने भारतीय क्रिकेट को पूर्व कप्तान हेमलता काला, अंतरराष्ट्रीय स्पिनर पूनम यादव, पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर प्रीति डिमरी और वर्तमान की स्टार ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा जैसी खिलाड़ी दी हैं।

पूर्व भारतीय महिला क्रिकेटर हेमलता काला का कहना है कि अब खिलाड़ियों के सामने विश्वकप जीतने के साथ ओलंपिक पदक जीतने का लक्ष्य भी होगा। भारतीय टीम प्रतिभा से भरपूर है, यदि सुनियोजित तैयारी की गई तो भारत पदक जीतकर इतिहास रच सकता है।

पूर्व भारतीय स्पिनर पूनम यादव ने कहा कि हर खिलाड़ी अपने कॅरिअर में ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व करने का सपना देखता है। क्रिकेट को यह मंच मिलना पूरे खेल के लिए गौरव की बात है। भारतीय महिला टीम में ओलंपिक पदक जीतने का पूरा दमखम है।

''हर क्रिकेटर का सपना ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व करना होता है। भारतीय महिला टीम के लिए यह सुनहरा मौका है और टीम मेडल जीतने की मजबूत दावेदार है।''

– रामा कुशवाहा, सदस्य, उत्तर प्रदेश क्रिकेट।

ई-रजिस्ट्री का आदेश वापस, फिर भी नहीं टूटी हड़ताल; 15वें दिन भी तहसील में कामकाज ठप

❍ टीएनएफ टुडे, आगरा।

सरकार ने ई-रजिस्ट्रेशन संबंधी विवादित आदेश वापस ले लिया, लेकिन नई नियमावली में अधिवक्ताओं और डीड राइटर्स की भूमिका स्पष्ट न होने से सदर तहसील में 15वें दिन भी हड़ताल जारी रही। उधर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश राज्य निर्माण जनमंच ने सरकार के फैसले को अधिवक्ता समाज की जीत बताते हुए इसका स्वागत किया।

ई-रजिस्ट्रेशन और फ्रंट ऑफिस व्यवस्था लागू करने वाला 4 जून, 2026 का आदेश वापस लिए जाने के बाद भी सदर तहसील में हड़ताल खत्म नहीं हो सकी। एआईजी स्टांप ने धरनास्थल पर आदेश वापसी का आधिकारिक पत्र सौंपा, लेकिन नई ई-पंजीकरण नियमावली में अधिवक्ताओं व डीड राइटर्स की भूमिका स्पष्ट न होने के कारण कार्य बहिष्कार जारी रखने का निर्णय लिया गया है।

तहसील बार एसोसिएशन के अध्यक्ष शंभूनाथ वर्मा और महासचिव अरविंद कुमार दुबे के नेतृत्व में वकीलों ने धरनास्थल पर सुंदरकांड का पाठ किया। कुछ वकीलों का कहना है कि 2 अगस्त, 2024 को लागू किए गए सरकारी गजट में अधिवक्ता और दस्तावेज लेखक संघ की सहभागिता नहीं दर्शाई गई है। मंगलवार को भी न्यायिक कार्य एवं उप निबंधक कार्यालय में कोई निबंधन संबंधी कार्य नहीं हुआ।

शासन को भेजा प्रत्यावेदन

महानिरीक्षक निबंधन कार्यालय की ओर से प्रमुख सचिव (स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन) को भेजे गए पत्र के अनुसार, 29 जून 2026 को संघर्ष समिति और बार एसोसिएशन के साथ हुई वार्ता के बाद 4 जून का विवादित आदेश वापस ले लिया गया है। इसके अलावा अधिवक्ताओं की प्रमुख मांगों को विचारार्थ शासन को भेजा गया है।

गुटबाजी हावी, फरियादी परेशान

ई रजिस्ट्री आदेश वापसी के बाद सदर तहसील में वकीलों की गुटबाजी मंगलवार को धरनास्थल पर सामने आई। अधिकांश वकील, कातिब, स्टांप वेंडर और टाइपिस्ट हड़ताल खत्म के पक्ष में नजर आए, जबकि कुछ वकीलों ने विरोध किया। इसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा है। रजिस्ट्री, विवाह पंजीकरण से लेकर मुकदमों की पैरवी तक ठप होने से लोग 15 दिनों से परेशान हैं। एआईजी स्टांप का कहना है कि कार्यालय खुले हुए हैं। रिपोर्ट जिलाधिकारी को भेज दी गई है।

प्रमुख मांगें जो शासन को भेजी गईं

- उत्तर प्रदेश ऑनलाइन दस्तावेज रजिस्ट्रीकरण नियमावली, 2024 की धारा-2, 4, 5 और 11 के उन खंडों को हटाना जो रजिस्ट्रेशन अधिनियम 1908 में असंगत हैं।
- नियमावली में अधिवक्ताओं एवं दस्तावेज लेखकों की भूमिका स्पष्ट रूप से निर्धारित की जाए।
- निबन्धन मित्र भर्ती संबंधी आदेश को तत्काल प्रभाव से समाप्त किया जाए।

TNF TODAY
टीएनएफ टुडे
थॉट्स न्यूज फैक्ट्स टुडे
tnftoday tnftoday
www.tnftoday.com / epaper

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री देने वाले आगरा विवि का महा-उत्सव

99 साल की बेमिसाल विरासत!

नारी शक्ति के हाथों में डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक शताब्दी सफर

टीएनएफ टुडे, आगरा।

भारतीय उच्च शिक्षा के इतिहास में 1 जुलाई का दिन ताजनगरी के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित होने जा रहा है। डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय (पूर्व नाम आगरा विश्वविद्यालय) अपने 99 वर्षों की शानदार और उतार-चढ़ाव भरी यात्रा को पूरा कर अपने 100वें वर्ष यानी शताब्दी वर्ष में विधिक रूप से प्रवेश कर रहा है। विश्वविद्यालय के पूर्व पत्रकारिता विभागाध्यक्ष एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. गिरजा शंकर शर्मा द्वारा तैयार किए गए विशेष आलेख के अनुसार, 25 जुलाई 1927 को स्थापित हुआ यह विश्वविद्यालय उत्तर भारत के उन चुनिंदा और सबसे पुराने संस्थानों में से एक है, जिसने देश को हर क्षेत्र में एक से बढ़कर एक अमूल्य राष्ट्रीय विभूतियां दी हैं।

नारी शक्ति और सशक्तिकरण का अनूठा विधिक संयोग

इस समय विश्वविद्यालय के इतिहास में एक बेहद दुर्लभ और गौरवशाली विधिक संयोग बना हुआ है, जहाँ शीर्ष नेतृत्व पूरी तरह से नारी शक्ति का प्रतीक है। देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल और स्वयं विश्वविद्यालय की वर्तमान कुलपति प्रोफेसर आशुरानी, महिला सशक्तिकरण की मिसाल के रूप में इस संस्थान को आगे बढ़ा रही हैं। इसके साथ ही विवि की वरिष्ठ आचार्य प्रोफेसर हेमा पाठक भी इस कमान में शामिल हैं। प्रोफेसर आशुरानी के नाम विवि के इतिहास में लगातार दो बार (49वें और 50वें) कुलपति बनने का विधिक रिकॉर्ड भी दर्ज है। जबकि इससे पूर्व वर्ष 1972 में श्रीमती सुरत प्यारी मुखिया को मात्र 22 दिनों के लिए पहली महिला कुलपति बनने का गौरव प्राप्त हुआ था।

विविः आजादी के आंदोलन से ए प्लस ग्रेडिंग तक की अनकही गाथा

- उत्तर भारत की उच्च शिक्षा का ऐतिहासिक आधार स्तंभ और ताजनगरी की अनमोल राष्ट्रीय धरोहर, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय 1 जुलाई को अपने स्थापना के 99 वर्ष पूर्ण कर शताब्दी वर्ष (100वें साल) के गौरवशाली सफर में विधिक प्रवेश करने जा रहा है।
- देश के इस चुनिंदा संस्थान ने अपने इस ऐतिहासिक सफर में राष्ट्र को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैसे शीर्ष विधिक व राजनीतिक नेतृत्व देकर देश का मान बढ़ाया है।
- नैक मूल्यांकन में ए प्लस ग्रेड हासिल कर चुके इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के सामने इस ऐतिहासिक शताब्दी वर्ष में अपनी विधिक साख को बनाए रखने और नई आवासीय चुनौतियों से पार पाने का एक बड़ा संकल्प है।

ब्रिटिश काल से शुरू हुआ सफर और 50 कुलपतियों का इतिहास

इस विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे ब्रिटिश शासकों का एक विशिष्ट भू-सामरिक और शैक्षणिक उद्देश्य था। अंग्रेजों की सीधी पकड़ और आगरा कॉलेज (1823), सेंट जॉन्स कॉलेज (1850) व राजपूत कॉलेज (1885) जैसी पुरानी विधिक संस्थाओं की मौजूदगी के कारण आगरा को इस विश्वविद्यालय के लिए चुना गया था। स्थापना के बाद सेंट जॉन्स कॉलेज के तत्कालीन प्राचार्य रेवरेंड कैनन ए. डब्ल्यू. डेविस को विवि का पहला उपकुलपति (वाइस चांसलर) बनाया गया था, जिन्होंने हीवेट पार्क (वर्तमान पालीवाल पार्क) में विवि भवन के लिए उस समय 50 हजार रुपये की भारी-भरकम विधिक धनराशि दान की थी। उनके नाम पर आज भी विवि परिसर में ऐतिहासिक डेविस हॉल मौजूद है। आजादी से पहले तक जहाँ विवि में 11 कुलपति रहे, वहीं आज तक यह संस्थान कुल 50 कुलपतियों का कार्यकाल देख चुका है, जिसमें इतिहासज्ञ प्रोफेसर अगम प्रसाद माथुर ने भी दो बार अपना कार्यकाल पूर्ण किया था।

भूभाग का विस्तार और आंबेडकर नामकरण का विधिक इतिहास

आगरा विश्वविद्यालय का भौगोलिक परिक्षेत्र शुरूआत में संयुक्त प्रांत (यूपी), राजपूताना और मालवा तक फैला हुआ था। इन 99 वर्षों के दौरान इसके निर्धारित भूभाग से कटकर आज लगभग 99 अन्य राजकीय, निजी और तकनीकी विश्वविद्यालय व मेडिकल-इंजीनियरिंग संस्थान विकसित हो चुके हैं। स्थापना के 69वें वर्ष में तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती ने इसका नाम बदलकर संविधान शिल्पी, भारत रत्न डॉ. भीमराव आंबेडकर के नाम पर रखा था। बाद में 45वें कुलपति डॉ. अरविंद दीक्षित के समय कुलाधिपति राम नाईक के निर्देश पर इसकी वर्तनी को विधिक रूप से सुधारकर अंबेडकर के स्थान पर आंबेडकर किया गया और तभी से प्रतिवर्ष 1 जुलाई को विवि दिवस भव्यता से मनाने की परंपरा शुरू हुई।

भाषा आंदोलन से लेकर पहले कम्युनिटी रेडियो तक का विधिक सफर

राधाकृष्णन समिति ने इसे यूपी की यूनिवर्सिटी का खिताब दिया था, क्योंकि यह केवल एक एफिलिएटिंग (संबद्धता देने वाला) विश्वविद्यालय था। लेकिन उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के प्रयासों से 14 दिसंबर 1953 को विवि के पहले आवासीय संस्थान के रूप में क.मुं. विद्यापीठ (के.एम.आई.) की स्थापना हुई। आजादी के बाद देश में छिड़े हिंदी बनाम अंग्रेजी भाषा विवाद के बीच आगरा विश्वविद्यालय को देश में हिंदी और भाषा विज्ञान के एक बड़े केंद्र के रूप में विकसित किया गया। यहाँ देश की पहली अत्याधुनिक फोनेटिक लैब स्थापित की गई, जिसका उद्घाटन देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने एक अभिनव विधिक प्रयोग के तहत किया था।

इसके बाद, अमर उजाला के संस्थापक श्री डोरीलाल अग्रवाल और के.एम.आई. के निदेशक प्रो. विद्यानिवास मिश्र के साझा प्रयासों से यहाँ हिंदी क्षेत्र के पत्रकारों की कमी को दूर करने के लिए पत्रकारिता पाठ्यक्रम की शुरूआत की गई। इसी के विस्तार के रूप में यहाँ कम्युनिटी रेडियो की स्थापना हुई, जो आज भी उत्तर प्रदेश के राजकीय विश्वविद्यालयों का एकमात्र सक्रिय रेडियो स्टेशन 90.4 आगरा की आवाज है।

नैक ए प्लस ग्रेड हासिल कर साबित की शैक्षणिक गुणवत्ता

वर्ष 2024 में नैक मूल्यांकन में ए प्लस ग्रेडिंग हासिल कर अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता साबित करने वाला यह विश्वविद्यालय आज अपनी गौरवशाली विरासत के साथ नए युग की विधिक और तकनीकी चुनौतियों का सामना करते हुए देश के निर्माण में निरंतर अग्रसर है।

अक्षर पुरुष बनबारी लाल तिवारी का १०१वां जन दिवस आज

बाह। भदावर विद्या मन्दिर इंटर व डिग्री कालेज बाह आगरा के संस्थापक पृधानाचार्य प्राचार्य बनबारी लाल तिवारी का 101वा जन्म दिन एक जुलाई को है। अक्षर पुरुष के जन्म दिवस पर भदावर प जी कलेज में मुख्य कार्यक्रम होगा। शंकर देव तिवारी के अनुसार प्रातः, 9बजे पुष्पांजलि दी जायेगी। इस समय अन्य कार्य क्रम भी होंगे।

भीषण गर्मी: आवारा कुत्तों का आतंक

सीएचसी पर 50 लोग रोजाना एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाने पहुंच रहे

खेरागढ़। भीषण गर्मी का असर अब इंसानों के साथ-साथ जानवरों के व्यवहार पर भी दिखाई देने लगा है। क्षेत्र में आवारा कुत्तों के हमले बढ़ने से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) पर रोजाना करीब 50 लोग कुत्ते के काटने के बाद एंटी रेबीज वैक्सीन (एआरवी) लगवाने पहुंच रहे हैं। डॉक्टरों के अनुसार तेज गर्मी के कारण कुत्ते अधिक चिड़चिड़े और आक्रामक हो जाते हैं। ऐसे में राह चलते लोगों, बच्चों और दोपहिया वाहन चालकों पर हमले की घटनाएं बढ़ रही हैं। सबसे अधिक खतरा सुबह और शाम के समय रहता है। जब आवारा कुत्ते झुंड बनाकर घूमते हैं। सीएचसी में प्रतिदिन बड़ी संख्या में डॉग बाइट के मरीज उपचार के लिए पहुंच रहे हैं। चिकित्सक घाव को तुरंत साबुन और बहते पानी से अच्छी तरह धोने, बिना देरी किए अस्पताल पहुंचकर एआरवी लगवाने और आवश्यकता पड़ने पर रेबीज इम्यूनोग्लोबुलिन लेने की सलाह दे रहे हैं।

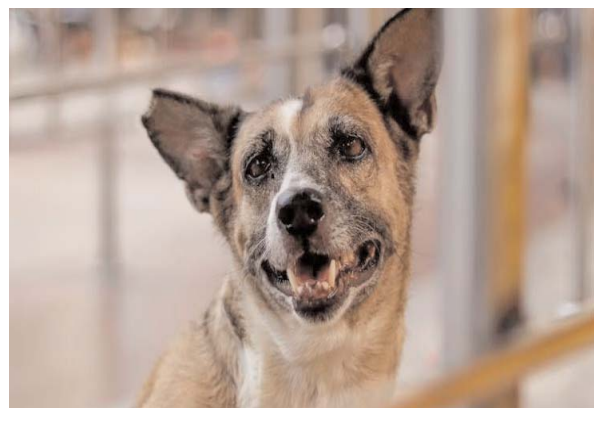

विहिप की बैठक में अमरनाथ यात्रा पर चर्चा

खेरागढ़। विश्व हिंदू परिषद जिला सीकरी की बैठक मंगलवार को खेरागढ़ में आयोजित हुई। बैठक में ब्रज प्रांत संगठन मंत्री राजेश ने कार्यकताओं से संगठन को गांव-गांव तक मजबूत करने का आह्वान किया। विभाग संगठन मंत्री सुशील ने बाबा अमरनाथ यात्रा, सेवा सप्ताह तथा आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों की तैयारियों की समीक्षा की और सभी दायित्ववान कार्यकताओं को जिम्मेदारियां सौंपीं। बैठक में संगठन विस्तार एवं सेवा कार्यों को गति देने पर भी विस्तार से चर्चा हुई। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष सतेंद्र भारद्वाज, राहुल जोशी, आरती गोस्वामी, अमरनाथ झा, कृष्णा मित्तल, विपिन सिंघल, धर्मेन्द्र सिकरवार सहित प्रांत एवं जिला स्तर के अनेक पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सड़क के गड्ढे बन रहे हादसों का कारण पिनाहट-भदरौली मार्ग पूरी तरह क्षतिग्रस्त

पिनाहट। कस्बा से भदरौली की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग की सड़क बुरी तरह जर्जर हो चुकी है। करीब 10 किलोमीटर लंबी इस सड़क पर प्रतिदिन बड़ी संख्या में आवागमन होता है। किंतु इस सड़क पर गहरे गड्ढे हो जाने के कारण आए दिन सड़क हादसे भी हो रहे हैं। पुलिस की माने तो क्षेत्र में सबसे ज्यादा सड़क दुर्घटनाएं इसी सड़क पर हो रही है। बुरी तरह सड़क जर्जर जाने के कारण लोगों को इस पर हादसे का शिकार होना पड़ रहा है। ग्रामीणों की माने तो लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाई गई यह सड़क भारी वाहनों के आवागमन के कारण जर्जर हो चुकी है। सड़क में गहरे गड्ढे रात के समय दिखाई नहीं पड़ते हैं जिम गिरकर लोग हादसे का शिकार हो रहे हैं। अब बरसात के दिनों में इन गढ़ों में पानी भर जाएगा, जिससे घटनाएं और बढ़ जाएगी। ग्रामीणों ने सड़क निर्माण की मांग की है। ग्रामीणों में उमाशंकर शास्त्री, वरुण गुप्ता, जयवीर सिंह, राजकिशोर शर्मा, मनोज शर्मा, राजू शर्मा, मनोज सिंह, सुरेश चंद्र शर्मा, उदयराज सिंह है।

ई-रजिस्ट्री व्यवस्था का विरोध

खेरागढ़ तहसील के अधिवक्ता 19वें दिन भी हड़ताल पर

खेरागढ़। प्रदेश सरकार की ई-पंजीकरण (ई-रजिस्ट्री) व्यवस्था के विरोध में खेरागढ़ तहसील के अधिवक्ताओं, दस्तावेज लेखकों और स्टाम्प वेंडरों का आंदोलन मंगलवार को 19वें दिन भी जारी रहा। सभी तहसील परिसर में धरने पर बैठे रहे और सरकार से ई-पंजीकरण व्यवस्था वापस लेने की मांग करते हुए सरकार के खिलाफ नारेबाजी की गई। अध्यक्ष हरिओम सिकरवार ने कहा कि जब तक शासन उनकी मांगों पर सकारात्मक फैसला नहीं करता, तब तक कलमबंद हड़ताल के साथ आंदोलन जारी रहेगा। हड़ताल के चलते तहसील में रजिस्ट्री एवं न्यायिक कार्य पूरी तरह ठप पड़े हैं, जिससे संपत्ति की खरीद-फ्रोख्त से जुड़े लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं अन्य कार्यों के लिए आने वाले लोगों को निराश होकर वापिस लौटना पड़ रहा है। इस दौरान कोषाध्यक्ष सुधीर शर्मा, सचिव रामवीर सिकरवार, रघुराज तोमर, सुरेश पाठक, अशोक शर्मा आदि लोग चक्का जाम में शामिल रहे।

50 किलो बदबूदार पनीर और 125 लीटर सिंथेटिक दूध जब्त

नमूने जांच को भेजे, दूध माफिया लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ कर रहे, दूध में मिलावट कर जहर बेच रहे

आगरा। जनपद में दूध माफिया सक्रिय हैं जो कि सिंथेटिक दूध तैयार कर शहर से देहात तक जगह-जगह बेच रहे हैं, किन्तु इन पर अंकुश नहीं है। आये दिन मिलावटी दूध और पनीर जब्त किया जा रहा है फिर भी माफियाओं के हौंसले बुलंद है। खाद्य सुरक्षा औषधि प्रशासन विभाग ने मंगलवार को कुकथला गांव में छापा मार भारी मात्रा में बदबूदार पनीर और सिंथेटिक दूध बरामद किया। विभागीय टीम ने नमूने जांच को भेज दिया, पनीर-दूध को फिंकवा दिया, इससे पूर्व भी रूरल एरिया में भारी मात्रा में दूध-पनीर जब्त किया गया था, टीम आये दिन छापेमारी में जुटी है फिर भी नकली दूध का अवैध कारोवार दिन-रात फल-फूल रहा है। विभागीय अधिकारी ने बताया कि कुकथला में नकली दूध और पनीर की सूचना मिली थी। सूचना मिलने पर टीम मौके पर पहुंचे, जहां निर्माण इकाई की जांच पडताल की गई तो पचास किलो ग्राम बदबूदार पनीर एवं 150 लीटर मिश्रित-मिलावटी दूध जब्त किया गया। टीम के नकली सामिग्री के नमूने जांच को भेज दिये। छापे की कार्यवाही सहायक आयुक्त खाद्य महेन्द्र श्रीवास्तव के निर्देशन में की गई। बताया गया है कि कुकथला निवासी शिव कुमार पुत्र बदन सिंह दूध का कारोवार करता है, उसकी फैक्ट्री है, छापे के दौरान फैक्ट्री में भीषण गंदगी और बदबू पसरी थी, मिलावटी दूध तैयार किया जा रहा था, टीम को देख गांव में हडकंप मच गया। खाद्य अधिकारी का कहना है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जायेगी जो भी सुरक्षा मानकों का उल्लंघन करेगा उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायेगी। फतेहाबाद, शमसाबाद, फतेहपुर सीकरी, खैरागढ, पिनाहट आदि रूरल एरिया में नकली दूध-पनीर का अवैध कारोवार व्यापक स्तर पर संचालित है, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन ने उक्त क्षेत्रों में कई बार छापे की कार्यवाही कर नकली दूध-पनीर पकडा था किन्तु आज तक दूध माफियाओं के खिलाफ सख्त कार्यवाही न होने पर इनके हौंसले बुलंद है जो कि लोगों की जिंदगी से खिलवाड कर मिलावट कर जहर बेच रहे हैं।

आगरा में कांग्रेसियों को किया हाउस अरेस्ट

आगरा। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को अयोध्या जाने से रोके जाने पर आगरा के कांग्रेसियों में रोष व्याप्त हो गया। वह भी अयोध्या जाने की तैयारी में थे कि पुलिस को इसकी भनक लग गई। आनन-फानन में आगरा के वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं को पुलिस ने हाउस अरेस्ट कर लिया। घरों पर पुलिस का पहरा बिठा दिया, पुलिस रातभर कांग्रेस नेताओं के घर डेरा डाले रही। शहर कांग्रेस के उपाध्यक्ष राजीव गुप्ता का आरोप है कि उनके कमलानगर फ्लैट पर पुलिस ने हाउस अरेस्ट कर लिया, रात को पुलिस का पहरा बना रहा, शहर और जिलाध्यक्ष सहित कई अन्य नेताओं के घरों पर पुलिस का पहरा बिठा दिया, जिससे कांग्रेसियों में भारी रोष व्याप्त है। चढावा चोरी मामले में अजय राय अयोध्या जाने को निकले थे कि पुलिस ने उन्हें रास्ते में अरेस्ट कर लिया और गेस्ट हाउस ले गई, प्रदेशभर के कांग्रेस नेता भी अयोध्या कूच करने की तैयारी में थे, जिन्हें समूचे प्रदेश में पुलिस ने जाने से रोक दिया।

दिन में घने बादल छाये रहे, गर्मी अपने शबाव पर

जुलाई के प्रथम सप्ताह में मानसून दस्तक देगा

आगरा। महानगर में मंगलवार को मौसम में आंशिक बदलाव नजर आया। घने बादल छाये रहे, दोपहर को गर्मी से हाल-बेहाल था, उमस से पसीना थमने का नाम नहीं ले रहा था, कूलर में भी पसीना बहता रहा, पंखे गर्म हवा फैंक रहे थे। जिन घरों में एसी लगे हैं, वह बाहर नहीं निकले। मौसम विभाग का पूवार्नुमान है कि बुधवार से सीजनल बारिश की शुरूआत हो सकती है। पहले दो-तीन दिन हल्की रिमझिम होने के आसार बने हुए हैं इसके बाद भारी बारिश के संकेत मिल रहे हैं। मासून देरी से आने पर अब जुलाई के प्रथम सप्ताह में बारिश देखने को मिलेगी। एक जुलाई से दस जुलाई के बीच अच्छी बारिश हो सकती है, तमाम एजेसिंयों ने झमाझम बारिश की संभावना व्यक्त की है। यदि बारिश होती है तो तापमान में दस से बाहर डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट आ सकती है, इससे आंशिक राहत मिलेगी। इन दिनों आगरा में गर्मी रिकॉर्ड स्तर पर है, दोपहर को घर से बाहर निकले की हिम्मत नहीं हो रही है, वही लोग बाहर निकल रहे हैं जिन्हें जरूरी काम से जाना है। प्रचंड गर्मी के कारण बाजारों में दोपहर को सन्नाटा पसर गया। सडकों पर वाहनों की संख्या ज्यादा नहीं थी किन्तु शाम ढलने पर सडकों पर टैजफिक बढ गया, चैराहों पर जाम जैसे हालात पैदा हो गए, लोग खरीदारी को सूर्यास्त के बाद ही निकले। प्रचंड गर्मी और उमस से तमाम बीमारियां जन्म ले रही हैं। लोगों को पेट दर्द एवं त्वचा संबधी शिकायतें बढ रही है। एसएन एवं जिला अस्पताल में मरीजों की संख्या लगातार बढ रही है। वातावरण में ऑक्सीजन की कमी होने पर सांस भी अटकने लगी है, दमा के मरीजों को भारी परेशानी का सामना करना पड रहा है। ओपीडी में मरीजों की भीड के कारण पैर रखने तक को जगह नहीं है। मौसम विभाग का पूवार्नुमान है कि जुलाई के प्रथम सप्ताह में मानसून दस्तक देगा, इसके बाद झमाझम होगी।

छलेसर में दौड़ती कार में लगी आग

देखते ही देखते कार जलकर राख हुई

आगरा। थाना एत्मादपुर क्षेत्र के कुबेरपुर में मंगलवार की रात एक दौडती कार में अचानक भीषण आग से हाइवे पर वाहनों के पहिये थम गए। सूचना मिलने पर पुलिस और दमकल मौके पर पहुंची। चालक ने समय रहते कार से छलांग लगा दी जिससे उसकी जान बच गई वरना बडा हादसा हो जाता। आग जलकर राख हो गई। पुलिस ने बताया कि छलेसर हाइवे से गुजरते समय एक हाईस्पीड कार में अचानक तेज चिगारी निकली, इसी दौरान चालक ने तुरंत इमरजैंसी ब्रेक लगाये और कार से छलांग लगा दी, जिससे उसकी जान बच गई। कार को आग का गोला देख वाहनों के पहिये थम गए, घटना स्थल पर आसपास के लोगों की भारी भीड जमा हो गई, हांलाकि लोगों ने आग बुझाने का प्रयास किया किन्तु वह नाकाम रहे, सूचना मिलने पर दमकल मौके पर पहुंची, कर्मियों ने आग पर काबू पा लिया। आशंका व्यक्त की गई है कि इंजन में शार्ट सर्किट के चलते कार में आग लगी। पुलिस ने कर को केन की मदद से हाइवे से हटाया, इसके बाद जाम से निजात मिली।

टीएनएफ टुडे मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड के लिए **धीरज शर्मा** द्वारा श्रीराम मार्केट फूलपुर अड्डा, देवरी रोड, फतेहाबाद आगरा से प्रकाशित एवं मुद्रक पवन पाठक द्वारा इम्प्रैशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड गुरू का ताल सिकंदरा रोड आगरा से मुद्रित।
संपादक: धीरज शर्मा, फोनः 9412359817, E mail: tnftoday.com@gmail.com वेबसाइटः www.tnftoday.com
पंजीयन नं. UPHIN/25/A3702 (संपादक इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.पी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।)

सम्पादकीय

सत्ता के सिंहासन पर विरासत-ए-आगरा

सियासत का शोर और बुनियादी सवालों की खामोशी

आगरा—जो कभी मुगलिया सल्तनत का केंद्र और आज वैश्विक मानचित्र पर भारत की पहचान है, वह राजनीतिक बिसात पर एक ऐसा प्यादा बनकर रह गया है जो जीतता तो हमेशा सत्ता पक्ष के लिए है, लेकिन खुद हमेशा हार जाता है। डबल इंजन की सरकार, केंद्र में मजबूत नेतृत्व और प्रदेश में उसी दल की सत्ता। जिला पंचायत से लेकर नगर निगम तक—हर सीढ़ी पर एक ही दल का झंडा लहरा रहा है। लेकिन इस संपूर्ण सत्ता के बावजूद, ताजनगरी की मूल भूत समस्याएं आज भी कागजी फाइलों के मकडजाल में दम तोड़ रही हैं। खोखले वादों की मेट्रो और प्यासी जनता- यह सवाल हर आगरावासी की जुबान पर है कि आखिर कैसे राज्य और केंद्र सरकार शहर को मेट्रो की पटरियों और पर्यटन के कुछ आयोजनों में उलझाकर संतुष्ट हो सकती है? करोड़ों की मेट्रो परियोजना अपनी जगह सही, लेकिन जो शहर आज भी बूंद-बूंद पानी के लिए तरस रहा हो, जहाँ यमुना एक नाले में तब्दील हो चुकी हो, वहाँ पेयजल संकट का स्थायी हल देने वाला बैराज आज तक क्यों नहीं बन सका? क्या प्यासे कंठों को मेट्रो की तेज रफ़्तार का सुकून मिल सकता है? कब तक चलेगा छलावा? न्याय की आस में दशकों से संघर्ष कर रहे आगरा के वकीलों और आम जनता का दर्द किसी से छिपा नहीं है। हाईकोर्ट बेंच की स्थापना, जो यहाँ के विकास और त्वरित न्याय के लिए मील का पत्थर साबित हो सकती थी, वह हर चुनाव में केवल एक चुनावी जुमला बनकर उभरती है। सत्ता के गलियारों में बैठे जनप्रतिनिधियों के लिए आखिर क्यों यह मांग एक अदृश्य दीवार से टकरा जाती है? अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम फाइलों में दौड़ता खेल, ताजमहल की खूबसूरती अपनी जगह है, लेकिन क्या एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन शहर को केवल पुरानी इमारतों के सहारे ही जिंदा रखा जाएगा? शहर में एक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट या खेल स्टेडियम की मांग सालों से लंबित है। पर्यटन को बढ़ावा देने और युवाओं को खेल के मैदान तक जोड़ने का यह सपना, सत्ता के अपने नुमाइंदों के होते हुए भी अधूरा क्यों है? क्या एक अदद अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम की सौगात देना इतना असंभव कार्य है? सवाल सत्ता से, जवाबदेही कौन तय करेगा? विडंबना यह है कि शहर के सांसद, विधायक, महापौर—सब सत्ता के शीर्ष सिंहासन पर विराजमान हैं। ऐसा नहीं है कि आगरा में योजनाएं नहीं आ रहीं, बल्कि हकीकत यह है कि बुनियादी जरूरतों (जैसे सीवर, जलभराव, प्रदूषण नियंत्रण और मूलभूत स्वास्थ्य सुविधाएं) को दरकिनार कर केवल चमक-दमक वाली योजनाओं को प्राथमिकता दी जा रही है। जिला पंचायत और नगर निगम में बैठी सत्ता भी मानो मूकदर्शक बनकर ऊपर से आने वाले फरमानों का इंतजार कर रही है। आगरा के विकास को महज ताजमहल की चारदीवारी तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह शहर विश्व पटल पर भारत का चेहरा है। सत्ता के पूर्ण नियंत्रण का असली इम्तिहान बड़े आयोजनों में तालियां बटोरना नहीं, बल्कि जनता की रोजमर्रा की दिक्कतों को दूर करना है। अब समय आ गया है कि सत्ता में बैठे जनप्रतिनिधि आत्ममंथन करें। आगरा के अधूरे सपनों को अब केवल प्रतीकात्मक आश्वासनों की नहीं, बल्कि ठोस जमीनी जवाबदेही की दरकार है।

धीरज शर्मा
प्रधान संपादक

अनसुने प्रसंग

अर्जुन और पांचाली को अपनी तलवार से काटना चाहता था ब्राह्मण

एक बार भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन वन मार्ग से कहीं जा रहे थे। मार्ग में अर्जुन को एक ऐसा ब्राह्मण दिखाई दिया जो केवल सूखी घास खा रहा था और उसकी कमर पर एक तीखी तलवार लटकी हुई थी। अर्जुन को यह देखकर अत्यंत विस्मय हुआ कि जो जीव अहिंसा के कारण सूखी घास खा रहा है, वह अपनी कमर पर हिंसक तलवार क्यों बांधे हुए है। अर्जुन ने उत्सुकता वश उस ब्राह्मण के पास जाकर इसका कारण पूछा। उस ब्राह्मण ने क्रोध में आकर कहा कि मैं संसार के चार लोगों को समूल नष्ट करने के लिए यह तलवार लेकर घूम रहा हूँ। ब्राह्मण ने पहला नाम परम भक्त प्रहलाद का लिया, जिसने खंभे से भगवान को प्रकट होने पर मजबूर कर दिया। जिससे मेरे प्रभु को कितना कष्ट हुआ। दूसरा नाम उसने पांचाली का लिया जिसने ऐन वक्त पर द्वारकाधीश को पुकारा और मेरे स्वामी को नंगे पैर भागना पड़ा। तीसरा नाम उसने कमाबाई का लिया जिसने मेरे प्रभु को बिना स्नान किए रूखी खिचड़ी खिलाई और चौथा नाम उसने स्वयं अर्जुन का लिया जिसके रथ के घोड़ों की सेवा स्वयं साक्षात जगत के स्वामी ने की। यह रहस्य सुनते ही अर्जुन का सारा वीर और भक्त होने का अहंकार पल भर में चूर हो गया और वे समझ गए कि संसार में ऐसे अनन्य प्रेमी भी हैं जो प्रभु को तनिक भी कष्ट में नहीं देख सकते। भक्ति का वास्तविक मर्म वही समझ सकता है जिसका हृदय प्रभु के प्रति पूरी तरह निष्कपट और संवेदनशील हो, क्योंकि ज्ञान से केवल रहस्य सुलझते हैं परंतु निश्चल प्रेम से साक्षात परमात्मा रीझते हैं।

अलनीनो के खतरनाक संकेत

"मानसून की सुस्त चाल से कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जल उपलब्धता पर व्यापक असर पड़ सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक का भी मानना है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून के कमजोर पड? से घरेलू आर्थिक बढ़ोतरी और मुद्रास्फीति के परिदृश्य पर दबाव पड़ेगा। यही नहीं अलनीनो का खतरा छोटी राशि का कर्ज देने वाले संस्थानों के लिए ऋ ण वसूली को भी प्रभावित कर सकता है। क्रिसिल की रिपोर्ट का तो यहां तक कहना है कि परिवारों के खर्च करने योग्य नगदी में कमी बड़ा जोखिम पैदा कर सकता है। यही नहीं ग्रामीण आय पर अलनीनो के असर पर नजर रखने की जरूरत है।

अलनीनो के शुरूआती संकेत मानसून पर दिखाई देने लगे हैं। मानसून की चाल और तीव्रता पर अलनीनो का असर दिनोंदिन बढ़ता दिखाई दे रहा है। देखा जाये तो मानसून की रफ्तार धीमी होने की वजह से देश में सूखे जैसे हालात का अंदेशा बढ़ने लगा है। अक्सर जून के तीसरे हफ्ते तक देश के बड़े हिस्से को मानसून सामान्यतः कवर कर लेता है। लेकिन पिछले पखवाड़े से इसकी गति ठहरी होने का सीधा - सीधा असर बारिश पर पड़ा है जिसका नतीजा देश के आधे से ज्यादा हिस्से पर सूखे जैसे हालात हैं। संयुक्त राष्ट्र की संस्था खाद्य एवं कृषि संगठन यानी एएफओ ने पहले ही चेतावनी दे दी है कि अलनीनो का भारत सहित एशिया के कई देशों की कृषि और खाद्य सुरक्षा पर व्यापक असर पड़ सकता है। खासकर भारत में मानसून कमजोर होने से धान और मक्का जैसी वर्षा आधारित फसलों के उत्पादन पर खासा असर पड़ सकता है और अलनीनो के प्रभाव के चलते भारत के ज्यादातर हिस्सों में सामान्य से कम बारिश हो सकती है। महाराष्ट्र, ओडिसा, छत्तीसगढ, झारखंड और बिहार के बड़े हिस्से अब भी अच्छी बारिश की आस लगाये बैठे हैं। ऐसे हालात में खेती के लिए जरूरी नमी में कमी आयेगी और फसलों की बढ़ोतरी खासकर मक्का और धान के उत्पादन पर दबाव बढ़ेगा। यही नहीं इसका असर वैश्विक खाद्य बाजारों और कीमतों पर भी पड़ेगा जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। होगा यह कि उत्पादन पर असर पड़ने से जहां खाद्यान्न आपूर्ति प्रभावित होगी, वहीं कुछ देशों को आयात पर अधिक निर्भर होना पड़ सकता है। एएफओ की रिपोर्ट के अनुसार भारत, पाकिस्तान, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम, फिलीपींस, इंडोनेशिया और तिमोर-लेस्ते जैसे देशों पर इसकी अत्यधिक मार पड़ेगी। इन देशों पर सूखे की मार का खतरा बढ़ सकता है। इससे इन देशों की कृषि पर आधारित लाखों लोगों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जायेगी। स्काईमेट की मानें तो फिलहाल देश के लगभग आधे हिस्से में बारिश की भारी कमी है।

दरअसल अलनीनो के दौरान प्रशांत महासागर का पानी सामान्य से काफी अधिक गर्म होने लगता है। नतीजन इसका असर दुनिया के कई देशों के ऊपर पड़ता है। भारत में इसका असर कमजोर मानसून और कम बारिश से जोड़ा जाता है। इतिहास इस बात का सबूत है कि ऐसी स्थिति में भारत में मौसमी बारिश न केवल कम हुयी है बल्कि उसकी असमानता भी खतरनाक स्थिति तक बढ़ी है। वैज्ञानिकों का मानना है कि अगले आठ से दस दिनों में बदलाव के कोई संकेत नहीं हैं। आमतौर पर मानसून में ब्रेक की यह स्थिति अक्सर जुलाई या अगस्त में दिखाई देती है लेकिन इस बार मानसून की यह सुस्त रफ्तार चिंता का विषय है। इसके चलते देश का तकरीबन 48 फीसदी हिस्सा कम बारिश और 24 फीसदी इलाका अत्यधिक कम बारिश की श्रेणी में पहुंच चुका है। इलाका बार देखें तो मध्य भारत में 64 फीसदी, गुजरात में 90 फीसदी, कोंकण एवं गोवा में 84 फीसदी, मध्य महाराष्ट्र में 81 फीसदी, झारखंड में 70 फीसदी, बिहार में 40 व उत्तर प्रदेश में 24 फीसदी कम बारिश हुयी है। इसकी अहम वजह बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में किसी मजबूत मौसम प्रणाली का विकसित न हो पाना है। दरअसल बंगाल की खाड़ी में बनने वाले निम्न दबाव वाले क्षेत्र और चक्रवात मानसून को मजबूती देते हैं और उसे दूसरे हिस्सों में आगे बढ़ने में मदद करते हैं। फिर अरब सागर में लो लेवल जेट भी पर्याप्त रूप से विकसित न हो पाना भी इसकी अहम वजह है।

सबसे बड़ी बात यह है कि अलनीनो का सबसे बड़ा असर बारिश की वितरण व्यवस्था पर पड़ता है। असलियत यह है कि कई बार कुल बारिश बहुत कम नहीं होती लेकिन उसका समय और क्षेत्रीय वितरण असंतुलित हो जाने से विभिन्न राज्यों में बुआई, अंकुरण और फसल की शुरूआती बढ़ोतरी पर काफी असर पड़ता है। ऐसे में सबसे बड़ी चिंता उन इलाकों को लेकर है कि जहां अब भी खेती बारिश पर ही निर्भर है। फिर देश के लगभग आधे से अधिक कृषि क्षेत्र में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था ही नहीं है। वहां किसानों की सारी उम्मीद बारिश पर ही टिकी होती है। सच्चाई यह है कि तेलंगाना , तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में सामान्य से काफी कम बारिश हुयी है। कम बारिश का असर खेती पर पड़ा है, खेती की नमी खत्म हो रही है। फसलें प्रभावित होने लगी हैं। जल भंडारण पर भी असर साफ दिखाई दे रहा है। केंद्रीय जल आयोग के मुताबिक देश के कुल 166 प्रमुख जलाशयों में कुल क्षमता का केवल 27.5 फीसदी पानी ही उपलब्ध है। यदि मानसून की सुस्ती लम्बे समय तक बनी रहती है तो पेयजल और सिंचाई दोनों मोर्चों पर दबाव काफी बढ़ जायेगा। जबकि मौसम विभाग का मानना है कि आने वाले दिनों में बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में लू का प्रकोप जारी रह सकता है। कोंकण , गोवा, मध्य महाराष्ट्र, बिहार, तेलंगाना, विदर्भ और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में अगले कुछ दिनों गर्म हवायें चलने की आशंका है। खरीफ के सीजन के लिए जून का आखिरी हफ्ता निर्णायक हो सकता है।

मानसून की सुस्त चाल से कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जल उपलब्धता पर व्यापक असर पड़ सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक का भी मानना है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून के कमजोर पड? से घरेलू आर्थिक बढ़ोतरी और मुद्रास्फीति के परिदृश्य पर दबाव पड़ेगा। यही नहीं अलनीनो का खतरा छोटी राशि का कर्ज देने वाले संस्थानों के लिए ऋ ण वसूली को भी प्रभावित कर सकता है। क्रिसिल की रिपोर्ट का तो यहां तक कहना है कि परिवारों के खर्च करने योग्य नगदी में कमी बड़ा जोखिम पैदा कर सकता है। यही नहीं ग्रामीण आय पर अलनीनो के असर पर नजर रखने की जरूरत है।

वह बात दीगर है कि मौसम विज्ञानी अलनीनो की स्थिति हाल-फिलहाल भले ज्यादा प्रभावी न मानें लेकिन आसन्न खतरे को नजरअंदाज तो नहीं कर सकते। सितम्बर तक इसके मजबूत होने की उम्मीद की जा रही है। फिर भी हाथ पर हाथ धरे तो नहीं बैठा जा सकता। अलनीनो के संभावित खतरे को देखते हुए सरकार अलर्ट मोड पर है। दरअसल अलनीनो का खतरा केवल मौसम का मुद्दा नहीं है, बल्कि कृषि,उत्पादन, खाद्य कीमतों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से भी जुड़ा है। यही वजह है सरकार घबराने की जगह इससे निपटने के मूड में है और हर तरह की तैयारी रखने पर जोर दे रही है। सरकार की रणनीति केवल बारिश का इंतजार करने की नहीं है। उसकी कम बारिश होने की स्थिति से मुकाबला हेतु वैकल्पिक व्यवस्था तैयार रखने की है। यही कारण है कि सरकार ने राज्यों से स्थानीय परिस्थितियों के मद्देनजर फसल योजना बनाने, कम पानी में बेहतर उपज देने वाली फसलों को बढ़ावा देने और किसानों तक समय पर वैज्ञानिक सलाह पहुंचाने के लिए कहा गया है। यही नहीं अलनीनो के असर के कारण आपूर्ति में आने वाली किसी भी समस्या या कीमतों में बढ़ोतरी से निपटने के लिए सरकार ने एक रणनीतिक सुरक्षा कवच तैयार किया है। सरकार के पास 43 लाख टन रिकार्ड दलहन का भंडार है। दालों का मौजूदा सुरक्षित भंडार मई 2025 में मौजूद 18 लाख टन के मुकाबले दो गुणे से भी ज्यादा है। सरकार का मानना है कि यदि अलनीनो से खरीफ की फसल की बुआई प्रभावित होती है तो दलहन के इस सुरक्षित भंडार का इस्तेमाल किया जायेगा। अक्सर देखा गया है सरकार दावे तो बहुत करती है लेकिन जब अमल का समय आता है तो सरकारी अमले के हाथ फूल जाते हैं या उसमें लूट-खसोट और बेईमानी के चलते पीड़ित ठगे से रह जाते हैं। जरूरत है ईमानदारी, संवेदनशीलता और समयबद्ध कार्रवाई की, तभी हम अलनीनो जैसे इस गंभीर संकट का मुकाबला करने में समर्थ हो सकते हैं।

ज्ञानेंद्र रावत
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद हैं।)

चार दशकों की तपस्या, निष्ठा और जमीनी संघर्ष के पर्याय जितेन्द्र फौजदार

राजनीति में पद और प्रतिष्ठा पाना बड़ी बात नहीं है, लेकिन संगठन के प्रति अटूट निष्ठा बनाए रखते हुए जनता के दिलों में अपनों जैसी जगह बना लेना एक दुर्लभ कला है। फतेहपुर सीकरी (91 विधानसभा क्षेत्र) और आगरा की राजनीति में एक ऐसा ही कद्दावर, बेदाग और जुझारू चेहरा हैं— जितेन्द्र फौजदार। पिछले 40 वर्षों से सामाजिक और राजनीतिक जीवन में लगातार सक्रिय जितेन्द्र फौजदार का पूरा जीवन राष्ट्रवाद, सांगठनिक साधना और जनता की सेवा की एक अमर गाथा है।

पंडित दीनदयाल जी की क्रीड़ा स्थली से मिला राष्ट्रवाद का संस्कार

जितेन्द्र फौजदार का नाता सिर्फ वैचारिक रूप से ही संघ से नहीं है, बल्कि उनका जन्म और परिवेश ही राष्ट्रवाद की उर्वर भूमि में हुआ है। एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता और भारतीय जनसंघ के संस्थापक युगद्दष्टा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की क्रीड़ा स्थली (ननिहाल) मंडीगुड़ के निवासी होने के नाते क्षेत्र की जनता का उनके साथ एक आत्मीय, रागात्मक और स्वाभाविक भावनात्मक लगाव है।

संघ शिक्षा वर्ग से लेकर भाजपा जिलाध्यक्ष तक का प्रेरणादाई सफर

जितेन्द्र फौजदार की सांगठनिक यात्रा बेहद प्रेरणादायी है। 1979 में प्राथमिक शिक्षा वर्ग से संघ में प्रवेश करने वाले जितेन्द्र फौजदार ने 1980 से 1982 तक संघ शिक्षा वर्ग का कड़ा प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में कॉलेज प्रमुख से लेकर 1986 में नगर मंत्री तक की जिम्मेदारी संभाली।

संघ, भाजपा में महत्वपूर्ण पदों का सफरनामा

जितेंद्र फौजदार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को 1988 में खण्ड कार्यवाह, 1993 में जिला शारीरिक शिक्षण प्रमुख और 1996 में जिला कार्यवाह के रूप में संघ को मजबूत किया। 1999-2000 के ऐतिहासिक राष्ट्र रक्षा महाशिविर में पूर्णकालिक के रूप में कार्य किया, जहाँ उनके परिवार की चार पीढ?ियों ने एक साथ प्रतिनिधित्व कर समर्पण की अनूठी मिसाल पेश की।

साल 2004 में वे आगरा भाजपा के जिलाध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसके बाद 2014 में भाजपा किसान मोर्चा उ.प्र. के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, 2017 में पिछड़ा वर्ग मोर्चा (ब्रज क्षेत्र) के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष और 2021 में भाजपा उत्तर प्रदेश के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य के रूप में अपनी सांगठनिक क्षमता का लोहा मनवाया।

राम जन्मभूमि आंदोलन और कड़े संघर्षों का नेतृत्व

जितेन्द्र फौजदार की पहचान एक जुझारू आंदोलनकारी के रूप में भी रही है। उन्होंने राम जन्मभूमि आंदोलन (1989-1992) में जिला प्रमुख (पूर्णकालिक) के रूप में एक-एक जत्थे का नेतृत्व करते हुए अयोध्या में कारसेवा की। इतना ही नहीं, 1992 में डॉ. मुरली मनोहर जोशी के नेतृत्व में निकली एकता यात्रा के दौरान वे फतेहपुर सीकरी से भारी संख्या में कार्यकर्ताओं को साथ लेकर कश्मीर पहुंचे और 26 जनवरी को श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहराया। क्षेत्र में सामाजिक समरसता और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी उनका योगदान अतुलनीय रहा है। फतेहपुर सीकरी और जगनेर में स्थानीय भू-माफियाओं के आतंक को खत्म कर संघ स्थान की जमीनों को मुक्त कराया, जो आज मधुकर स्मृति संघ स्थान के नाम से जानी जाती हैं। अछनेरा में अवैध पशु वधशाला के विरोध में आंदोलन का सफल नेतृत्व किया और विधानसभा क्षेत्र के ग्राम सांधन में परावर्तन कराकर लोगों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ा।

उच्च शिक्षित व्यक्तित्व और सामाजिक सरोकार

एम.ए. (राजनीति शास्त्र, भूगोल एवं अंग्रेजी) और बी.एड. जैसी उच्च शैक्षणिक योग्यता रखने वाले जितेन्द्र फौजदार का झुकाव हमेशा से लोक-कल्याण की ओर रहा है। उन्होंने 2012 के विधानसभा चुनाव में पार्टी के निर्देश पर डाक विभाग की अपनी सरकारी सेवा से त्यागपत्र देकर फतेहपुर सीकरी से भाजपा प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा था। वे सृजन फाउंडेशन, लोक स्वाभिमान फाउंडेशन (जल, जंगल, जमीन, जलवायु संरक्षण के लिए समर्पित) और शिक्षा भारती जैसी संस्थाओं के माध्यम से पर्यावरण पुनर्जीवन, नदियों के सीमांकन और युवाओं को उद्यमिता प्रशिक्षण देने के काम में लगातार जुटे हुए हैं।

स्वभाव में सरलता और फतेहपुर सीकरी के हर घर में पकड़

जैसा कि उनके बारे में अक्सर कहा जाता है कि दिलों को जीतने का हुनर कोई उनसे सीखे। जितेन्द्र फौजदार का व्यवहार इतना सौम्य और सरल है कि कोई भी उनसे मिले बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकता। जब भी वे कार्यकर्ताओं और आम जनता से मिलते हैं, तो इतनी गर्मजोशी से गले लगाते हैं कि सामने वाले का आधा दुख वहीं दूर हो जाता है। अपने जाट समुदाय के साथ-साथ सर्वसमाज, युवाओं, मजदूरों, किसानों और व्यापारियों के बीच उनकी छवि एक बेदाग और सर्वस्वीकार्य नेता की है। 6 बार फतेहपुर सीकरी विधानसभा और 4 बार आगरा लोकसभा के संयोजक के रूप में उनके सफल सांगठनिक अनुभव का ही नतीजा है कि क्षेत्र के चप्पे-चप्पे और घर-घर में उनकी मजबूत पकड़ है।

सितारों की चाल: आपका भविष्यफल

दिनांक 02 जुलाई 2026 गुरुवार आषाढ़ कृष्ण द्वितीया

कल का दिन कैसा होगा? इसकी तैयारी आज ही करें!

प्रिय पाठकों, TNF टुडे हमेशा आपकी सुविधा को सर्वोपरि रखता है। इसी उद्देश्य से हम आपको एक दिन अग्रिम (Advance) राशिफल प्रदान कर रहे हैं ताकि आप अपने महत्वपूर्ण कार्यों, बैठकों और यात्राओं की योजना आज रात ही बना सकें। सितारों की चाल जानकर संभावित चुनौतियों के प्रति पहले से सजग रहना ही सफलता की पहली सीढ़ी है।

मार्गदर्शन: आचार्य दीदी
डॉ. सरस्वती देवकृष्ण गौड़
(एस्ट्रो वास्तु शोधनम)
मो. 9119336673

शुभकार्य हेतु आज का चंद्रबल

आज मेष मिथुन कर्क सिंह तुला और धनु राशि के जातकों का आत्मबल मानसिक उत्साह और भाग्य का सहयोग बहुत उत्तम रहेगा। गुरुवार के दिन भगवान विष्णु जी को पीले पुष्प अर्पित करने और मस्तक पर केसर का तिलक लगाने से जीवन के सभी मानसिक व आर्थिक संकट दूर होते हैं और सुख समृद्धि हमेशा बढ़ती रहती है।

मेष

मेष राशि के लिए समय खास रहेगा। जो लोग व्यापार या कारोबार से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह समय काफी लाभदायक साबित होने वाला है। लंबे समय से रुके हुए कार्यों में गति आएगी।

वृष

आज का दिन आपके लिए आर्थिक और पारिवारिक दृष्टिकोण से भाग्यशाली सिद्ध होगा और पुराने विवाद हल होंगे।

मिथुन

आज आप अपनी तीव्र बुद्धिमत्ता के बल पर जटिल सांगठनिक और व्यापारिक समस्याओं को बेहद आसानी से हल कर लेंगे।

कर्क

मानसिक रूप से आज आप खुद को अत्यधिक ऊजार्वान महसूस करेंगे। जिससे किसी बड़े निवेश का निर्णय लेने में सफलता मिलेगी। नई जिम्मेदारी मिलने के संकेत भी बन रहे हैं।

सिंह

आज कार्यस्थल पर सहकर्मियों के साथ किसी भी प्रकार के व्यर्थ के अहंकार के टकराव से आपको पूरी तरह बचना होगा।

कन्या

आज आपको मित्रों और वरिष्ठ सहयोगियों की मदद से किसी बड़े नए व्यावसायिक अनुबंध की प्राप्ति होगी।

तुला

आज सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र से जुड़े जातकों का प्रभाव बढ़ेगा और जीवनसाथी का पूरा सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक

धार्मिक यात्राओं के सुंदर योग बन रहे हैं। जिससे आपकी आंतरिक व्याकुलता शांत होगी और मन को संबल मिलेगा।

धनु

आज सेहत को लेकर विशेष रूप से सावधान रहें और सगे संबंधियों के साथ धन का बड़ा लेन देन न करें।

मकर

साझेदारी में चल रहे व्यापार में आज मनोनुकूल प्रगति होगी और नए बड़े व्यावसायिक सहयोगी आपसे जुड़ेगे।

कुंभ

आज आप अपने पराक्रम और कुशल कूटनीति के बल पर विरोधियों के हर चक्रव्यूह को ध्वस्त करने में सफल रहेंगे।

मीन

कला साहित्य लेखन और रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़ी प्रतिभाओं को आज कोई विशिष्ट पहचान मिलने के सुंदर योग हैं।

डिप्रेशन से छुटकारा दिला सकता है चीकू

आलू की तरह दिखने वाला फल चीकू सपोटा के नाम से भी जाना जाता है। चीकू में विटामिन-बी, विटामिन ई, पोटैशियम,फाइबर और मिनरल आदि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जो शरीर को कई बीमारियों से लड़ने की ताकत देते हैं। चीकू खाने से त्वचा, दिमाग और पाचन अच्छा रहता है। चीकू खाने से शरीर को तुरंत ऊर्जा मिलती है। चीकू का हर भाग स्वास्थ्य लाभों से भरा है इसके पत्ते, जड़ और छाल को औषधी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे में आइए जानते हैं चीकू खाने से व्यक्ति को मिलते हैं कौन से गजब के फायदे।

हड्डियां बनाए रखे मजबूत

चीकू में कैल्शियम, आयरन और फास्फोरस भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जो शरीर की हड्डियों को मजबूत बनाने का काम करता है। चीकू का रोजाना सेवन हड्डियों को मजबूत बनाने का काम करता है। चीकू खाने से बुढ़ापे की वजह से होने वाली कमजोर हड्डियों को ठीक करने में भी मदद मिलती है।

एनर्जी

चीकू को एनर्जी का अच्छा सोर्स माना जाता है। इसमें मौजूद कार्बोहाइड्रेट शरीर को एनर्जी देने का काम करते हैं। जिन लोगों को एनर्जी की कमी महसूस होती है उनके लिए चीकू का सेवन फायदेमंद हो सकता है।

वेट लॉस

चीकू शरीर के मेटाबॉलिज्म को तेज करता है, जिसकी वजह से व्यक्ति को लंबे समय तक भूख का अहसास नहीं होता और वेट लॉस में मिलती है। चीकू को दिन में किसी भी समय खाया जा सकता है। ये शरीर को तुरंत एनर्जी देने के साथ शरीर को मजबूत भी बनाता है।

डिप्रेशन में राहत

चीकू दिमाग को सेहतमंद बनाए रखने के साथ नींद न आने की समस्या को भी दूर करता है। चीकू का सेवन करने से गहरी और अच्छी नींद आती है। चीकू में मौजूद तत्व दिमाग में ऑक्सीजन पहुंचाने में मदद करते हैं। इतना ही नहीं चीकू का सेवन डिप्रेशन को दूर करने के लिए भी किया जा सकता है।

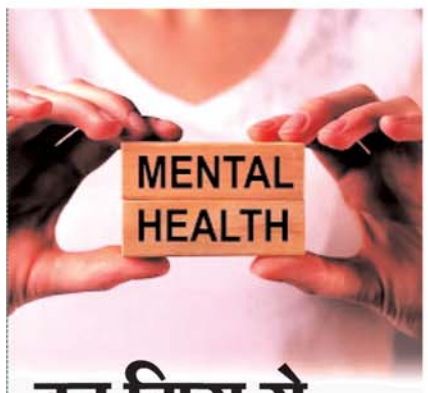

इन टिप्स से रखें मेंटल हेल्थ का ख्याल

आजकल तनाव न चाहते हुए भी हम सभी की जिंदगी का हिस्सा बन गया है। स्ट्रेस का बुरा असर, हमारी फिजिकल और मेंटल हेल्थ पर होता है। अक्सर फिजिकल हेल्थ खराब होने पर जब इसके लक्षण नजर आते हैं, तो हम आसानी से इन्हें समझ लेते हैं और इसे ठीक करने की कोशिश में भी लग जाते हैं। लेकिन, मेंटल हेल्थ खराब होने पर इसके लक्षणों को हम या तो समझ नहीं पाते हैं या नजरअंदाज कर देते हैं। खासकर महिलाएं अपनी मेंटल हेल्थ पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाती हैं। तनाव और चिंता की वजह से अगर आपके चेहरे की मुस्कुराहट भी कहीं खो गई है, तो आपको अपनी मेंटल हेल्थ पर ध्यान देने की जरूरत है।

मेंटल हेल्थ का ख्याल रखने के लिए फॉलो करें ये टिप्स

- एक्सपर्ट का कहना है कि मेंटल हेल्थ को सही रखने के लिए, डाइट बहुत जरूरी है। डाइट में पोषक तत्वों की कमी भी मेंटल हेल्थ पर असर डाल सकती है।
- अगर आप अधिक तनाव में हैं और इसकी वजह से आपका किसी काम में मन नहीं लग रहा है या आप हर वक्त परेशान रहती हैं, तो किसी से इस बारे में खुलकर बात जरूर करें।
- ओवरथिंकिंग की वजह से भी मेंटल हेल्थ खराब होती है। इसलिए, किसी भी चीज या डर को लेकर, बहुत अधिक न सोचें वरना इसका असर आपकी सेहत पर हो सकता है।
- किसी बात को बार-बार सोचने से, स्ट्रेस और एंग्जायटी बढ़ने लगती है। इसकी वजह से सिरदर्द, शरीर में दर्द और घबराहट हो सकती है। इसलिए, ज्यादा न सोचें और मन को शांत रखने की कोशिश करें।
- एक्सरसाइज, मेडिटेशन और प्राणायाम भी मेंटल हेल्थ सुधारने में मदद कर सकता है। इसलिए, इसे रूटीन का हिस्सा जरूर बनाएं।
- जब आपको स्ट्रेस या एंग्जायटी महसूस हो, तो गहरी सांस लें और कुछ देर के लिए सारी चीजों पर से ध्यान हटाने की कोशिश करें।
- दिन में कुछ समय उन चीजों को जरूर दें, जो आपको खुशी देती हों।

पैरों के तलवे में होती है जलन इन टिप्स से मिलेगा आराम

क्या आपको भी पैरों के तलवे में जलन होती है, जलन के मारे काम करना भी मुश्किल हो जाता है तो हम आपको कुछ आजमाए हुए टिप्स बता रहे हैं जिससे आपको काफी आराम मिल सकता है। अक्सर लोगों को पैरों के तलवे में जलन की शिकायत होती है। यह एक असहज और परेशान करने वाली समस्या होती है, कई बार जलन के कारण नींद भी नहीं आती है और काम भी प्रभावित होता है। अगर आप भी इस स्थिति का सामना करते हैं तो हम आपको कुछ ऐसे उपाय बता रहे हैं जिससे आपको तलवे में जलन से राहत मिल सकती है।

पैरों के तलवे में जलन क्यों होती है?

- पैरों की अत्यधिक गर्मी के कारण ऐसा हो सकता है। अगर आप लंबे वक्त तक जूते पहने रह सकते हैं तो इसके कारण तलवे में जलन हो सकती है।
- खराब रक्त प्रवाह के कारण भी पैरों के तलवे में जलन हो सकती है।
- शरीर में आयरन और विटामिन B12 की कमी के कारण भी यह समस्या हो सकती है।

पैरों के तलवे की जलन दूर करने के उपाय

- तलवे में अगर बहुत ज्यादा जलन होती है तो आप ठंडा पानी में 20 मिनट तक पैरों को डूबा कर रख सकते हैं। आप चाहे तो इसमें कुछ बर्फ के टुकड़े डाल सकते हैं, इससे काफी आराम महसूस होगा।
- इसके अलावा आप तलवे में हो रही जलन को दूर करने के लिए तलवों की मालिश कर सकते हैं, मालिश करने से ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है और जलन में आराम मिलता है।
- अपने आहार में आयरन विटामिन B12 जैसे पोषक तत्व शामिल करें, इससे शरीर में खून बढ़ता है और रक्त प्रवाह को बनाए रखने में मदद मिलती है।
- तलवे के जलन को कम करने के लिए आप मेहंदी का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। रात के समय पैरों में मेहंदी लगा लें और सुबह उठकर धो लें इससे तलवे में ठंडक मिलती है।
- इसके अलावा आप पैरों में एलोवेरा और चंदन का लेप लगा सकते हैं। इन दोनों ही चीजों की तासीर ठंडी होती है। इसका पेस्ट बना ले और तलवे पर भी 20 मिनट तक लगा कर रखें, फिर साफ पानी से धो लें।
- अगर इन उपायों को आजमाने के बाद भी आपको राहत नहीं मिलती है तो आपको डॉक्टर से कंसल्ट करना चाहिए।

डाइट से एडेड शुगर हटाना फायदेमंद!

चीनी...यह एक ऐसा शब्द है जिसे सुनते ही मुंह में मिठास घुलने लगती है। चीनी जिस तरह से हर मिठाई, हलवे और खीर का स्वाद बढ़ाती है, उसी तरह से बीमारियों का खतरा भी बढ़ाती है। वजन बढ़ने से लेकर डायबिटीज तक, चीनी शरीर के लिए कई तरह से नुकसानदायक मानी जाती है। ऐसे में कई लोगों ने चीनी को अपनी डाइट से पूरी तरह से हटा दिया है। वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो चीनी को अपनी थाली से बिल्कुल नहीं निकाल पा रहे हैं और भरपूर मीठा खा रहे हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि एक दिन में कितना चीनी यानी शुगर का सेवन करना आपके लिए सेफ है।

अति किसी भी चीज की बुरी होती है, यह बात चीनी के सेवन के मामले में भी लागू होती है। डॉक्टर्स से लेकर हेल्थ एक्सपर्ट भी इस बात को मानते हैं कि व्हाइट शुगर सेहत के लिए कई तरह से हानिकारक होती है। अब इस बात पर इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने भी मुहर लगा दी है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशियन ने कुछ समय पहले भारतीयों की डाइट को लेकर 17 गाइडलाइन्स की एक ज्वाइंट रिपोर्ट जारी की थी। जिसमें से एक गाइडलाइन में भारतीयों को एक दिन में कितनी शुगर लेनी चाहिए, इसका जिक्र किया गया है।

एक दिन में कितनी चीनी का सेवन करना चाहिए?

अगर एक सामान्य एडल्ट प्रति दिन 2000 कैलोरी लेता है और इसका 5 परसेंट यानी 25 ग्राम शुगर इन्टेक करता है तो वह हाई शुगर कहलाता है। अगर इसे सामान्य भाषा में समझें 20-25 ग्राम शुगर का एक दिन में सेवन किया जा सकता है।

संभव रहे तो चीनी को अपनी डाइट से पूरी तरह से हटा देना चाहिए। क्योंकि इसमें कैलोरी के अलावा किसी भी तरह के न्यूट्रिशियन शामिल नहीं होते हैं। कैलोरी शरीर के लिए तभी फायदेमंद होती है जब विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर के साथ ली जाए।

रिपोर्ट के मुताबिक, एडेड शुगर को अपनी डाइट से पूरी तरह से हटा देना फायदेमंद होता है। एडेड शुगर में चीनी, गुड़, ग्लूकोज, फरूक्टोज, डेक्सट्रोज, शुगर सिरप आदि चीजें आती हैं। किसी भी चीज में शुगर को मिलाकर खाना सेहत के लिए किसी भी तरह से बेहतर नहीं होता है क्योंकि इससे शरीर में सिर्फ कैलोरी बढ़ती है।

क्या नेचुरल शुगर है सेफ?

रिपोर्ट में फलों और दूध में पाई जाने वाली शुगर को नेचुरल बताया है। फलों और खाद्य पदार्थों में प्राकृतिक रूप से मौजूद रहने वाली शुगर को एक्सपर्ट भी सेफ मानते हैं. लेकिन सभी फलों और खाने की चीजों में मौजूद शुगर आपकी सेहत के लिए ठीक नहीं होती है। मेडिकल बॉडी ने अपनी रिपोर्ट में गन्ने के जूस को सेहत के लिए हानिकारक माना है। गन्ने के जूस में शुगर की मात्रा बहुत ज्यादा होती है और यह आपको बीमार कर सकती है। 100 ग्रा के गन्ने के जूस में 15 ग्राम शुगर होती है, ऐसे में इसका अधिक सेवन आपकी सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। शरीर में अत्यधिक शुगर से कई बीमारियों को न्योता मिल सकता है।

रिपोर्ट में सॉफ्ट ड्रिंक्स के सेवन पर भी ऐतराज जताया गया है. मेडिकल बॉडी का मानना है कि सॉफ्ट ड्रिंक्स में सिर्फ हाई शुगर कंटेंट होता और न्यूट्रिशियनल वैल्यू ना के बराबर होती हैं। ज्यादा सॉफ्ट ड्रिंक्स के सेवन से मोटापा, टाइप 2 डायबिटीज, दांतों की समस्या और दिल की बीमारी भी हो सकती है। साथ ही सॉफ्ट ड्रिंक्स पानी और फ्रेश फरूट्स की जगह नहीं ले सकते हैं, ऐसे में उन्हें जितना हो सके इनका सेवन करने से बचना चाहिए। सॉफ्ट ड्रिंक्स की जगह छाछ, नींबू पानी, बिना चीनी वाले फरूट जूस और नारियल पानी के सेवन की सलाह दी गई है। जूस से ज्यादा फलों के सेवन पर भी जोर दिया है। रिपोर्ट में ऐसा कहा गया है कि फरूट फाइबर और न्यूट्रियंट वेल्यू की वजह से ज्यादा सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं।

गाइडलाइन्स में भारतीयों की हेल्दी डाइट पर जोर दिया गया है। रिपोर्ट में हरी सब्जियों के अत्याधिक सेवन की बात की गई है और डाइट से प्रोसेस्ड फूड, पैक्ड जूस, सॉफ्ट ड्रिंक को हटाने की सलाह दी गई है। साथ ही चाय और कॉफी के सेवन को भी कम करने की बात की गई है, क्योंकि इसमें कैफीन होता है जो सेहत के लिए हानिकारक साबित साबित हो सकता है।

देखने की क्षमता प्रभावित करता है प्रेसबायोबिया विकार

प्रेसबायोबिया आंखों से जुड़ी एक बीमारी जिसमें आंखों की करीब वस्तुओं पर फोकस करने की क्षमता कम हो जाती है।

प्रेसबायोपिया आंखों से संबंधित एक विकार है। इस शब्द को ग्रीक शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है बूढ़ी आंख, यह एक ऐसी स्थिति होती है जब आपकी धीरे-धीरे चीजों को करीब से स्पष्ट रूप से देखने की क्षमता खो देती है। इस स्थिति में नजदीकी वस्तुओं पर तेजी से ध्यान केंद्रित करने की क्षमता धीरे-धीरे खत्म हो जाती है। आमतौर पर यह 40 से 45 साल की उम्र में शुरू होती है और समय के साथ बिगड़ती जाती है। यह बाकी उम्र से संबंधित दृष्टि समस्याओं जैसे अंधापन, हाइपरोपिया मायोपिया से अलग है। यह एक प्राकृतिक परिवर्तन है जो लगभग सभी लोगों को प्रभावित करता है। इसको लेकर हमने हेल्थ एक्सपर्ट से बाती है।

प्रेसबायोपिया के लक्षण

- छोटी लेखन सामग्री पढ़ने में कठिनाई होती है, खासकर अगर रोशनी बहुत कम है।
- जब आपको यह बीमारी होती है तो आप अपने स्मार्टफोन या किसी भी किताब, मेनू , लेबल को अधिक स्पष्ट रूप से देखने के लिए अपनी आंखों से दूर रखते हैं।
- कोई नजदीकी काम करते हैं या कुछ नजदीक रखकर पढ़ते हैं तो इसे सिर में दर्द और आंखों में तनाव होना।

प्रेसबायोपिया के कारण

- आंखों की उम्र बढ़ाने की प्रक्रिया प्रेसबायोपिया की ओर ले जाती है।
- समय के साथ आंखों का आंतरिक लेंस लचीला नहीं रहता है, जिससे नजदीकी वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो जाता है।
- उम्र के साथ लेंस को नियंत्रित करने वाली मांसपेशियां कमजोर हो जाती है।
- यह अनुवांशिक भी हो सकती है। अगर आपके घर में माता-पिता या दादा- दादी कोप्रेसबायोपिया था तो आपको भी यह स्थिति होने की संभावना ज्यादा रहती है।
- डायबिटीज,उच्च रक्तचाप और दिल की बीमारी सहित कई स्वास्थ्य स्थितियों में भीप्रेसबायोपिया हो सकता है।
- आंखों की चोट के कारण भी लेंस को नियंत्रित करने वाले मांसपेशियों को नुकसान पहुंच सकता है,इससे भी प्रेसबायोपिया हो सकता है।

अमेरिका में जन्मजात नागरिकता कानून बरकरार:

सुप्रीम कोर्ट ने ट्रम्प का आदेश रद्द किया, कहा- देश में जन्मा हर बच्चा अमेरिकी नागरिक होगा

एजेंसी, वॉशिंगटन।

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को बड़ा संवैधानिक फैसला सुनाते हुए कहा कि अमेरिका में जन्म लेने वाला हर बच्चा जन्म से अमेरिकी नागरिक होगा, चाहे उसके माता-पिता देश में अवैध रूप से रह रहे हों या फिर अस्थायी वीजा पर आए हों।

अदालत ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के उस कार्यकारी आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें ऐसे बच्चों को जन्म से नागरिकता देने से इनकार किया गया था। यह फैसला 5-4 के बहुमत से आया। मुख्य न्यायाधीश जॉन रॉबर्ट्स ने बहुमत का फैसला लिखा।

अमेरिका में पिछले 158 साल से यह व्यवस्था लागू है कि वहां जन्म लेने वाला हर बच्चा अपने जन्म के साथ ही अमेरिकी नागरिक बन जाता है। यह अधिकार अमेरिकी संविधान के 14वें संशोधन में दिया गया है।

शपथ लेने के कुछ घंटे बाद ही जारी किया था आदेश

ट्रम्प ने अपने शपथ ग्रहण वाले दिन यानी 20 जनवरी 2025 को एग्जीक्यूटिव ऑर्डर पर साइन कर बर्थ राइट सिटीजनशिप पर रोक लगा दी थी। इसके कुछ ही दिन बाद कई संघीय (फेडरल) जिला अदालतों ने इस आदेश पर अस्थायी रोक लगा दी। यानी ट्रम्प का आदेश लागू ही नहीं हो सका। हालांकि उस समय बर्थराइट सिटिजनशिप पर रोक नहीं लगी थी, बल्कि ट्रम्प के आदेश पर रोक लगी थी।

इसके बाद फिर मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। सुप्रीम कोर्ट ने अब अंतिम फैसला देते हुए कहा कि 14वां संशोधन जन्मजात नागरिकता

की गारंटी देता है। इसलिए ट्रम्प का आदेश असंवैधानिक है और उसे रद्द कर दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में यह भी कहा कि अमेरिकी संसद (कांग्रेस) सामान्य कानून बनाकर जन्म से नागरिकता के अधिकार का दायरा नहीं बदल सकती। अगर इस व्यवस्था में बदलाव करना है, तो इसके लिए संविधान में संशोधन करना होगा।

ट्रम्प खुद भी सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे

1 अप्रैल को ट्रम्प इस मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट में मौजूद रहे। किसी मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपति का सुप्रीम कोर्ट में इस तरह सुनवाई के दौरान मौजूद रहना बेहद दुर्लभ माना जाता है।

अगर ट्रम्प का यह आदेश लागू हो जाता, तो हर साल अमेरिका में जन्म लेने वाले करीब 2.5 लाख बच्चों की कानूनी स्थिति प्रभावित होती। साथ ही परिवारों को अपने नवजात बच्चे की नागरिकता तय कराने के लिए माता-पिता की नागरिकता और इमिग्रेशन स्थिति के दस्तावेज भी देने पड़ते।

यह फैसला ट्रम्प के लिए इसलिए भी बड़ा झटका माना जा रहा है क्योंकि उन्होंने अपने चुनाव प्रचार के दौरान इसे खत्म करने का वादा किया था।

ट्रम्प 1 अप्रैल 2025 को जन्मजात नागरिकता मामले से जुड़ी सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट गए थे। अमेरिकी इतिहास में यह पहली बार था जब कोई मौजूदा राष्ट्रपति सुप्रीम कोर्ट में अपने किसी नीतिगत मामले की लाइव कानूनी बहस को सुनने खुद अदालत कक्ष में मौजूद रहा।

ट्रम्प 1 अप्रैल 2025 को जन्मजात नागरिकता मामले से जुड़ी सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट गए थे। अमेरिकी इतिहास में यह पहली बार था जब कोई मौजूदा राष्ट्रपति सुप्रीम कोर्ट में अपने किसी नीतिगत मामले की लाइव कानूनी बहस को सुनने खुद अदालत कक्ष में मौजूद रहा।

अमेरिका में 157 साल पहले मिला था जन्मजात नागरिकता का अधिकार

1865 में अमेरिकी गृहयुद्ध खत्म होने के बाद, जुलाई 1868 में अमेरिकी संसद में 14वें संशोधन को मंजूरी दी गई थी। इसमें कहा गया था कि देश में पैदा हुए सभी अमेरिकी नागरिक हैं। इस संशोधन का मकसद गुलामी के शिकार अश्वेत लोगों को अमेरिकी नागरिकता देना था।

हालांकि, इस संशोधन की व्याख्या इस प्रकार की गई है कि इसमें अमेरिका में जन्में सभी बच्चों को शामिल किया जाएगा, चाहे उनके माता-पिता का इमिग्रेशन स्टेट्स कुछ भी हो।

ट्रम्प और उनके समर्थकों का दावा है कि इस कानून का फायदा उठाकर गरीब और युद्धग्रस्त देशों से आए लोग अमेरिका आकर बच्चों को जन्म देते हैं। ये लोग पढ़ाई, रिसर्च, नौकरी के आधार पर अमेरिका में रुकते हैं। बच्चे का जन्म होते ही उन्हें अमेरिकी नागरिकता मिल जाती है। नागरिकता के बहाने माता-पिता को अमेरिका में रहने की कानूनी वजह भी मिल जाती है।

अमेरिका में यह ट्रेंड काफी लंबे समय से जोरों पर है। आलोचक इसे बर्थ टूरिज्म कहते हैं। प्यू रिसर्च सेंटर की 2022 की रिपोर्ट के मुताबिक 16 लाख भारतीय बच्चों को अमेरिका में जन्म लेने की वजह से नागरिकता मिली है।

अमेरिकी संविधान का 14वां संशोधन बच्चों को जन्मजात नागरिकता की गारंटी देता है।

ट्रम्प के करीबियों को भी मिला था जन्मजात नागरिकता का लाभ

दिलचस्प बात यह है कि ट्रम्प के कई करीबी सहयोगी भी इसी जन्मजात नागरिकता व्यवस्था का लाभ उठा चुके हैं। विदेश मंत्री मार्को रूबियो, एफबीआई निदेशक काश पटेल और उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की पत्नी उषा वेंस के माता-पिता दूसरे देशों से अमेरिका आए थे। इनका जन्म अमेरिका में हुआ, इसलिए इन्हें जन्म के साथ ही अमेरिकी नागरिकता मिल गई।

कोर्ट के इस फैसले से भारतीयों को राहत क्यों मिली?

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, इस समय अमेरिका में करीब 54 लाख भारतीय मूल के लोग रहते हैं। यह अमेरिका की कुल आबादी का लगभग 1.6% है। इनमें बड़ी संख्या उन भारतीयों की है जो एच-1बी वीजा पर अमेरिका में काम कर रहे हैं। इनमें ज्यादातर लोग टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, हेल्थकेयर और फाइनेंस जैसे क्षेत्रों में कार्यरत हैं। अगर ट्रम्प का कार्यकारी आदेश लागू हो जाता, तो अमेरिका में रह रहे ऐसे हजारों भारतीय परिवार प्रभावित होते जो वहां बच्चे की योजना बना रहे हैं या जिनके बच्चे अमेरिका में जन्म लेते।

H-1B वीजा धारकों के लिए गर्भावस्था और बच्चे के जन्म के नियम नहीं बदलेंगे

अमेरिका के इमिग्रेशन कानून या वीजा नियमों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, जो H-1B वीजा या किसी अन्य वैध अस्थायी वीजा पर रह रहे लोगों को अमेरिका में गर्भधारण करने या बच्चे को जन्म देने से रोकता हो। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भी ऐसे परिवारों के अमेरिका में जन्म लेने वाले बच्चों को संविधान के 14वें संशोधन के तहत जन्म के साथ ही अमेरिकी नागरिक माना जाएगा।

सरकार बोली-पेट्रोल में 20% एथेनॉल मिलाना एक एक्सपेरिमेंट: असर अगले साल पता चलेगा

सुप्रीम कोर्ट का मौजूदा सप्लाई पॉलिसी जारी रखने का आदेश

एजेंसी, नई दिल्ली।

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कर्नाटक हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड को विन्प डिस्टिलरीज एंड शुगर प्राइवेट लिमिटेड से एथेनॉल खरीद बढ़ाने पर विचार करने को कहा था।

सुप्रीम कोर्ट ने यह आदेश BPCL की याचिका पर दिया। कोर्ट ने कहा कि सरकार की मौजूदा पॉलिसी में कोई बदलाव नहीं होगा। BPCL ने कहा कि हाईकोर्ट का आदेश पेट्रोल में 20% एथेनॉल मिश्रण की राष्ट्रीय नीति को प्रभावित कर सकता है।

इस दौरान केंद्र सरकार ने बताया कि पेट्रोल में 20% एथेनॉल मिलाने का प्रोग्राम अभी भी एक्सपेरिमेंट है। इसका पूरा असर अगले साल तक पता चलेगा।

क्या है एथेनॉल सप्लाई का विवाद

एथेनॉल सप्लाई का यह विवाद कर्नाटक की विन्प डिस्टिलरीज एंड शुगर प्राइवेट लिमिटेड की याचिका से जुड़ा है। विन्प ने कर्नाटक हाईकोर्ट में याचिका लगाते हुए दलील दी थी कि उसका एथेनॉल बनाने का प्लांट है। इसकी सलाना उत्पादन क्षमता करीब 9.90 करोड़ लीटर है, लेकिन उसे केवल 3.92 करोड़ लीटर का आवंटन किया गया है।

सरकार ने कहा था कि किसी कंपनी को पहले ज्यादा आवंटन मिला तो इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि कंपनी को हर बार उतनी ही मात्रा में आवंटन मिलेगा। हाईकोर्ट ने BPCL को खरीद कोटा बढ़ाने पर विचार करने को कहा। इस आदेश के खिलाफ इढउछ ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई थी।

सरकार बोली- 1.4 लाख करोड़ की बचत हुई

सरकार का कहना है कि एथेनॉल मिश्रण योजना से कच्चे तेल का आयात कम हुआ है और देश को 1.4 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है। इससे ऊर्जा सुरक्षा बढ़ी है और प्रदूषण भी कम हुआ है। भारत ने पेट्रोल में 20% एथेनॉल मिलाने का लक्ष्य तय समय से पांच साल पहले पूरा कर लिया है। 1 अप्रैल से पूरे देश में एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल मिल रहा है। अब सरकार ने 2030 तक 30% एथेनॉल मिश्रण का नया लक्ष्य रखा है।

सरकार ने ए20 को बताया सुरक्षित

हाल के दिनों में कुछ लोगों, खासकर ऑटोमोबाइल क्षेत्र से जुड़े लोगों ने आशंका जताई है कि ए20 पेट्रोल से पुरानी गाड़ियों को नुकसान पहुंच सकता है और ईंधन दक्षता कम हो सकती है। हालांकि, केंद्र सरकार ने इन आशंकाओं को खारिज किया है। तेल मंत्रालय ने हाल ही में कहा था कि ए20 ईंधन से वाहन इंश्योरेंस अमान्य होने या वाहनों को नुकसान पहुंचने के दावों के समर्थन में कोई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं। मंत्रालय के अनुसार, एथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम सुरक्षित, उपभोक्ता हितैषी और आर्थिक रूप से फायदेमंद है।

ढाका में अज्ञात लोगों ने हिंदू छात्र को बंधक बनाया, की मारपीट, फिरौती वसूलने के बाद सड़क पर फेंका

एजेंसी, ढाका।

बांग्लादेश की राजधानी ढाका में एक हिंदू छात्र को बंधक बनाकर बुरी तरह पीटने का मामला सामने आया है। 25 साल के सुभाष देउरी जगन्नाथ विश्वविद्यालय में कानून की पढ़ाई कर रहे हैं। वह पढ़ाई के साथ-साथ एक मंदिर में पुजारी के रूप में भी काम करते हैं। सोमवार रात कुछ अज्ञात लोगों ने उन्हें पकड़ लिया और उनसे पैसे वसूलने के बाद, उन्हें सड़क किनारे फेंककर फरार हो गए।

सुभाष मूल रूप से खुलना के मागुरा जिले के रहने वाले हैं। वह ढाका में अपने एक दोस्त के साथ किराए के कमरे में रहते हैं। उनके रूममेट दुर्जोय साहा ने बताया कि सुभाष सोमवार रात करीब 11:30 बजे किसी काम से कमरे से बाहर निकले थे। कुछ देर बाद सुभाष के ही फोन से दुर्जोय को कॉल आया और पैसे मांगे गए। दुर्जोय के पास उस समय पैसे नहीं थे, इसलिए वह मदद नहीं कर सके।

इसके बाद बदमाशों ने सुभाष के

रिश्तेदारों से संपर्क किया। उनकी बहन जया ने बताया कि रात करीब एक बजे सुभाष के नंबर से फोन आया था। एक अनजान आदमी ने उनसे 30,000 टका की मांग की। बदमाशों ने पैसे भेजने के लिए एक फोन नंबर दिया। जब परिवार ने उस नंबर पर 26,000 टका भेज दिए, तब बदमाशों ने सुभाष को पुरानी ढाका के इलाके में सड़क पर फेंक दिया। मंगलवार सुबह करीब सात बजे सुभाष के दोस्तों ने उन्हें बेहोशी की हालत में सड़क पर पड़ा पाया। उन्हें तुरंत ढाका मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल की पुलिस चौकी के प्रमुख मोहम्मद फारुक ने बताया कि सुभाष की हालत गंभीर है और उनका इमरजेंसी विभाग में इलाज चल रहा है।

बंगाल से कश्मीर तक 1500किमी लंबी मानसून पट्टी बनी:

उत्तर भारत में 1 से 4 जुलाई तक भारी बारिश संभव, 26 राज्यों में मानसून पहुंचा

भोपाल/जयपुर/लखनऊ/पटना। मानसून ने मंगलवार दोपहर जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल, उत्तराखंड और उत्तरप्रदेश में एंट्री कर ली है। देश में अब तक 26 राज्यों को कवर कर लिया है। इससे पहले 24 जून को मध्य प्रदेश-गुजरात में एंट्री ली थी। इसके बाद 6 दिन अटका रहा। इससे कई राज्यों में गर्मी और उमस बनी हुई है।

उधर, दिल्ली और उत्तर भारत के लिए राहत की खबर आ रही है। सैटेलाइट तस्वीरों में करीब 1,500 किमी लंबी मानसून ट्रफ (कम दबाव की लंबी पट्टी) बनती हुई दिखाई दी है। यह उत्तरी बंगाल की खाड़ी से लेकर जम्मू-कश्मीर तक फैली हुई है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, मानसून ट्रफ बन चुकी है, लेकिन फिलहाल यह हिमालय की तलहटी (फुटहिल्स) के करीब स्थित है। यह ट्रफ धीरे-धीरे दक्षिण की ओर अपनी सामान्य स्थिति में पहुंचेगी, उत्तर भारत में बिहार, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर 1 से 4 जुलाई के बीच भारी बारिश हो सकती है।

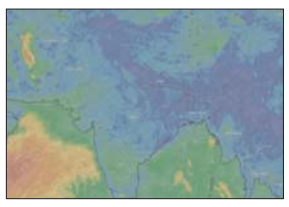

समझें, मानसून ट्रफ क्या होती है

मानसून ट्रफ कम दवाब क्षेत्र की एक लंबी पट्टी होती है, जिसे दक्षिण-पश्चिम मानसून की रीढ़ माना जाता है। यह ट्रफ अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से नमी से भरी हवाओं को भारत के अंदरूनी हिस्सों तक खींचकर लाती है। इसी वजह से देश के कई इलाकों में बारिश होती है।

6 राज्यों में गर्मी का असर, पारा 40°C पार

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और गुजरात के कई शहरों में मंगलवार को पारा 40°C से ज्यादा रहा। देश में सबसे ज्यादा पारा हरियाणा के रोहतक में 43.5°C दर्ज किया गया।

वहीं दिल्ली में 43.4°C , यूपी के बांदा में 43.2°C , मध्य प्रदेश के खजुराहो में 41.2°C , पंजाब के आनंदपुर साहिब में 40.6°C और गुजरात के सुरेंद्रनगर में 40.5°C रहा।

भारत में 9 करोड़ बच्चे हीटवेव की चपेट में

यूनिसेफ की 'चिल्ड्रन्स क्लाइमेट रिस्क रिपोर्ट 2026' के अनुसार, भारत में करीब 8.93 करोड़ बच्चे ऐसे इलाकों में रहते हैं, जहां हीटवेव का खतरा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि देश के लगभग 99.7 प्रतिशत बच्चे किसी न किसी जलवायु संबंधी खतरे का सामना कर रहे हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, 96.2 प्रतिशत भारतीय बच्चे सूखे के खतरे वाले क्षेत्रों में रहते हैं, जबकि 92 प्रतिशत बच्चे तेज गर्मी से प्रभावित हैं, जहां तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच जाता है।

पुणे मर्डर- क्या हुडी में दिखा व्यक्ति चेतन ही था:पुलिस चलने का तरीका जांचेगी, सिया का केस लड़ने पर 2 वकीलों का दावा

पुणे। पुणे के केतन अग्रवाल मर्डर केस में पुलिस आरोपी चेतन चौधरी का गेट एनालिसिस करेगी। गेट एनालिसिस यानी पुलिस चेतन के चलने का तरीका, बॉडी मूमेंट, कदमों की लंबाई की जांच करेगी। ऐसा इसलिए किया जा रहा है क्योंकि दावा है कि 18 जून को (मर्डर वाले दिन) लोहगढ़ फोर्ट पर हुडी पहने दिखा युवक चेतन ही था।

इधर, मर्डर के इस मामले में नया कानूनी विवाद सामने आया है। आरोपी सिया का केस लड़ने को लेकर आशुतोष श्रीवास्तव नाम के वकील और सिया के परिवार के बीच विवाद की स्थिति बनती दिख रही है।

दरअसल, 2 वकीलों आशुतोष श्रीवास्तव और विपुल दुशिंग ने सिया गोयल की ओर से कोर्ट में पैरवी करने का दावा किया है। आशुतोष का कहना है कि सिया गोयल ने अपना केस लड़ने के लिए उन्हें नियुक्त किया है।

सबरीमाला गोल्ड केस-पूर्व टीडीबी चीफ के खिलाफ सबूत मिले

केरल हाईकोर्ट ने एसआईटी को नया केस दर्ज करने की मंजूरी दी

एजेंसी, कोच्चि।

केरल के सबरीमाला मंदिर के गोल्ड चोरी मामले में एसआईटी ने दावा किया है कि जांच में त्रावणकोर देवस्वोम बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष पीएस प्रशांत के खिलाफ अहम सबूत मिले हैं। एसआईटी ने कहा कि उसके पास कई अधिकारियों और बोर्ड सदस्यों की भूमिका से जुड़े पर्याप्त सबूत हैं। जांच एजेंसी का कहना है कि इस मामले में आपराधिक धोखेबाजी, जालसाजी और साजिश जैसे गंभीर अपराध बनते हैं।

केरल हाईकोर्ट के जस्टिस राजा विजयराघवन वी और जस्टिस केवी जयकुमार की डिवीजन बेंच ने कहा कि एसआईटी इस मामले में नया केस दर्ज कर सकती है। रक्छ चाहे तो 2025 की गोल्ड प्लेटिंग को लेकर अलग से नया मामला दर्ज कर सकती है। या फिर अपनी जांच निष्कर्षों को 2019 में सोने के गायब होने से जुड़े पहले से चल रहे

मामले में जोड़ सकती है।

हाईकोर्ट ने कहा कि कुछ अन्य अधिकारियों और पूर्व बोर्ड सदस्यों की भूमिका की जांच अभी जारी है। अगर उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत मिलते हैं, तो एसआईटी उनके खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई कर सकती है। मामले की अगली सुनवाई 20 जुलाई को होगी।

सबरीमाला मंदिर से जुड़े इस मामले में आरोप है कि मंदिर के गर्भगृह और द्वारपालक मूर्तियों पर लगी सोने की परत वाले तांबे के प्लेट्स से सोना निकाला गया और उसे हड़प लिया गया। इस मामले की जांच के लिए बनी केरल सरकार की एसआईटी ने पाया कि देवस्वोम बोर्ड के अधिकारियों ने बिना सही अनुमति ये प्लेट्स बाहर दीं और इसमें कारोबारी व अन्य लोगों की मिलीभगत थी।

यूएस-ईरान डील के बाद होर्मुज से क्यों छिपकर निकल रहे जहाज

एजेंसी, वाशिंगटन।

अमेरिका और ईरान के बीच 28 फरवरी को शुरू हुआ युद्ध फिलहाल थम गया है। दोनों ही देशों ने कुछ शर्तों के साथ संघर्ष को रोकने पर सहमति जताई है। इसी के साथ युद्ध के दौरान ईरान की तरफ से बंद किया गया होर्मुज जलडमरूमध्य भी वाणिज्यिक पोतों के परिवहन के लिए खोल दिया गया। लेकिन अब ईरान की तरफ से होर्मुज के इस्तेमाल के लिए भी कथित तौर पर नियम तय करने के बाद इस जलक्षेत्र से गुजरने वाले जहाजों-टैंकरों के लिए भ्रम की स्थिति है। इस बीच सामने आया है कि भारत आने वाले कई जहाज छिपकर होर्मुज पार कर रहे हैं, ताकि किसी खतरे की स्थिति से बचा जा सके।

नौपरिवहन मामलों पर नजर

युद्ध विराम के बाद भी जहाजों पर ईरान के हमले जारी

अमेरिका और ईरान के बीच हालिया संघर्ष पर रोक लगाने और कूटनीतिक वार्ता फिर से शुरू करने की सहमति के बावजूद होर्मुज जलडमरूमध्य में स्थिति पूरी तरह से सामान्य नहीं हुई है। दरअसल, युद्ध विराम लागू होने के बाद भी होर्मुज में ईरानी जलक्षेत्र के करीब से न निकलने वाले जहाजों पर ईरान की तरफ से हमले किए गए थे। ईरान ने बीते हफ्ते होर्मुज जलडमरूमध्य के पास सिंगापुर के झंडे वाले मालवाहक जहाज एवर लवली पर ड्रोन से हमला किया। इसके बाद शनिवार को पनामा के झंडे वाले वाणिज्यिक टैंकर 'एम/टी किकु' को भी एक ईरानी ड्रोन द्वारा निशाना बनाया गया, जो 20 लाख बैरल से अधिक कच्चा तेल ले जा रहा था। इन घटनाओं के चलते जहाज ऑपरेटरों का ईरान पर से भरोसा उठ गया है।

रखने वाली कंपनी केप्लर की तरफ से हाल ही में जारी किए गए डेटा के मुताबिक, फारस की खाड़ी से भारत की तरफ आने वाले करीब 62 फीसदी जहाजों और टैंकरों ने होर्मुज पार करने के दौरान अपने ट्रांसपॉन्डर बंद कर लिए, ताकि उन्हें इस संवेदनशील इलाके में ट्रैक न किया जा सके। यह अपने आप में चौंकाने वाली बात इसलिए है, क्योंकि अमेरिका-ईरान के बीच युद्ध रोकने पर जून के मध्य में ही सहमति बन गई थी और 17 जून को दोनों देशों ने इससे जुड़े एक समझौते पर भी हस्ताक्षर किए थे।

होर्मुज जलडमरूमध्य में नौपरिवहन की वर्तमान स्थिति सुरक्षा चिंताओं की वजह से काफी चुनौतीपूर्ण बनी हुई है, हालांकि हाल ही में यातायात में थोड़ी रिकवरी देखी गई है, फिर भी स्थिति सामान्य से निचले स्तर पर है।

1. यातायात में बेहद धीमी रिकवरी

अमेरिका और ईरान के बीच संघर्ष पर रोक लगाने और राजनयिक वार्ता फिर से शुरू करने की सहमति के बाद जलडमरूमध्य से गुजरने वाले जहाजों की संख्या में मामूली सुधार हुआ है। हाल के दिनों में दैनिक यातायात लगभग 24 से 42 जहाजों के बीच दर्ज किया गया है, जो कि संघर्ष से पहले के 50-100+ जहाजों के दैनिक औसत से काफी कम है।

2. होर्मुज में ही बंटे कई मार्ग

केप्लर के डेटा के मुताबिक, लगभग 94% जहाज अब अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन (आईएमओ) की तरफ से निर्धारित आधिकारिक शिपिंग लेन के बाहर से गुजर रहे हैं। अधिकतर जहाज ओमान की तटरेखा के करीब वाले मार्ग का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिसे होर्मुज में बाकी रास्तों के मुकाबले सुरक्षित माना जा रहा है।

3. गुपचुप तरीके से निकल रहे जहाज

खतरों से बचने के लिए एक बड़ी संख्या में कमर्शियल जहाज अपना ऑटोमैटिक आइडेंटिफिकेशन सिस्टम (एआईएस) ट्रांसपोंडर बंद कर रहे हैं, ताकि वे रडार से अदृश्य रहें और उनकी लोकेशन गुप्त रहे। इनमें बड़ी संख्या भारत आने वाले जहाजों की है।

एसआईआर पर 23 विपक्षी दलों ने सीजेआई को लेटर लिखा:डीएमके ने भी दस्तखत किए

बोले- चुनाव आयोग की प्रकिया मनमानी और लोकतंत्र विरोधी

एजेंसी, नई दिल्ली।

चुनाव आयोग की स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन प्रक्रिया और चुनाव से जुड़े अन्य मुद्दों को लेकर 23 विपक्षी दलों और एक निर्दलीय सांसद ने मंगलवार को चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया को लेटर लिखा।

डीएमके के प्रवक्ता सरवनन अन्नादुरई ने आरोप लगाया कि रक्छ की प्रक्रिया मनमानी और लोकतंत्र विरोधी है। एसआईआर का उद्देश्य मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से हटाना है, जबकि लोकतंत्र का आधार सभी वयस्क नागरिकों को वोट का अधिकार देना है।

लेटर पर कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम समेत 23 विपक्षी दलों और निर्दलीय

राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने हस्ताक्षर किए हैं।

एसआईआर से जुड़े मुद्दों पर विपक्ष की सहमति

सूत्रों के मुताबिक, लेटर पर साइन करने वालों में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी, राजद नेता तेजस्वी यादव, सपा प्रमुख अखिलेश यादव, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और वाम दलों के नेता शामिल हैं।

लेटर में कहा गया है कि जब लोकतांत्रिक संस्थाएं अपेक्षित तरीके से काम नहीं करतीं, तब देश की जनता न्यायपालिका की ओर उम्मीद से देखती है। इसमें चुनाव आयोग की भूमिका और रक्छ प्रक्रिया से विभिन्न राज्यों में लोगों पर पड़े प्रभाव की बात की गई।

कांग्रेस महासचिव बोले- विपक्ष एकजुट है

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि 8 जून को इंडिया ब्लॉक की बैठक में लेटर भेजने का फैसला लिया गया था।

अक्षर पुरुष स्व. बनबारी लाल तिवारी संस्थापक व प्रधानाचार्य व प्राचार्य भदावर विद्या मन्दिर इंटर व डिग्री कालेज बाह आगरा की जुबानी उनकी कहानी

स्वर्गीय बन बारी लाल तिवारी अक्षर पुरुष आज के दिन एक सो एक साल के हो गये। उनका निधन 17 मार्च 1997को आगरा के केजी नार्सिंग होम में इलाज के दौरान हो गया था । 1 जुलाई 1925 को प्रमाणपत्र के अनुसार आगरा से 28 किमी आगरा जलेशर मार्ग स्थिति उस्मानपुर गांव में हुआ था । जन्म के डेढ़ साल के वे थे तभी उनकी माता का निधन हो गया । जिससे पढ़ने लिखने लायक जेसे ही वे हुए तो उनके मामा बाबू राम और रामे कटारा बाह ले आए । उनके बड़े मामा बाबूराम जी सरकारी शिक्षक थे। पास के ही एक पाठशाला जो फतेहपुरा गांव में थी ले जाकर रखा और एक और दो कक्षा वहां से की। तीन में बाह में संस्कृत पाठशाला से चार करके बाह से अपने गांव चले गए। आगरा से मिडिल कर आगरा से ही मोती लाल नेहरू रोड पर एक इंग्लिश कोचिंग सेंटर से मैट्रिक का फार्म भर निजी तौर पर परीक्षा लाहौर से देने गए। बारहवां फिरोजाबाद से करके बी.ए. आगरा कालेज से करते समय 1942 में भारत छोड़ो सत्याग्रह के दौरान गिरफ्तार हुए और चार माह की सजा काटी। जब जेल से निकले तो सीधे कुछ करने की नीयत से बाह चले गए। जैसा उन्होंने अपनी कही बीती में कहा के अनुसार .....

उनकी कही

(साइड ए)

मेरी मां का पता नहीं कब चलीं गयीं। मैं जब अपने 'मामा' के यहां बाह पहुंचा तो 'मामी' के आगमन पर कोई कार्यक्रम दावत चल रहा था। मैं मामी के लिए कुछ भेंट देना चाहता था। जब मुझे कुछ नहीं सूझा तो मैंन डलिया के नीचे से बकरियों के बच्चों को छोड़ दिया और वे आगे मैं पीछे बकरियों के बच्चों ने पूरी दावत स्थल का चक्कर लगाया। तब कहीं जाकर मैं उनहें पकड़ सका और मैंने तब मांई को जाकर दिखाया कि मांई ये मेरी बकरियों के बच्चे हैं।

मेरे मामा के यहां 500 बीघा जमीन थी। वे खेती नाम के लिए करते थे। क्योंकि राजस्व तक चुकाने के लिए खेती में पैदावार नहीं हो पाती थी। मामा के पास दूसरा काम दलाली का था। वह अपने घ्ज्ञर के पास ही मैदान में अनाज मण्डी लगवाया करते थे। इस मण्डी में दूर–दराज क्षेत्र से आने वाले सौदागरों का अनाज बिकवा कर मिलने वाले कमीशन से भी कमाई करते थे।

मेरे बड़े मामा श्री बाबूराम कटारा जो पूर्व में शिक्षण कार्य कर-के छोड़ चुके थे, मेरे गांव से बाह पहुंचने के बाद उन्होंने पुनः नौकरी कर लीं। उनहें चंद्रपुर (कमतरी) में अध्यापक बनाया गया। मैं उनके साथ ही चन्द्रपुर जाता और शाम को लौटता। एक साल बाद मामा का तबादला फतेहपुर के लिए कर दिया गया। यहां आने जाने का साधन नहीं हो पाने से सप्ताह में एक दिन के लिए ही बाह आना हो पाता। मेरे मामा ने मेरे को पढ़ाई के लिए फतेहपुरा में ही रखा। मामा खाना स्वयं बनाकर मुझे खिलाते और पढ़ाते थे। फतेहपुरा में एक लो–प्राइमरी स्कूल था। यहां केवल कक्षा दो तक की पढ़ाई होती थी। मैंने यहां से दो जमात पास कर ली तो मुझे मामा ने बाह लाकर यहां के प्राइमरी स्कूल में कक्षा तीन में दाखिल करा दिया।

बाह में जो शिक्षक थे वे मामा के साथी थे। मैंने यहां दर्जा तीन पास कर चौथे में प्रवेश लिया। चौथे दर्जा के शिक्षक मास्टर छक्की लाल गुप्ता थे। जो गरीब लाला थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। वे व्यापारी लालाओं में से नहीं थे। चौथा क्लास मुंशी छक्की लाल ने पढ़ाया। वे अब जीवित नहीं हैं। उनके कुटुम्ब में लड़कियां ही ज्यादा थीं। उस समय कक्षा चार तक की ही शिक्षा प्राइमरी शिक्षा हुआ करती थी। इसके बाद मैट्रिक शिक्षा हुआ करती थी। चौथी क्लास पास करने के बाद बाह के मिडिल सकूल में मेरा दाखिला कराया गया। यहां मेरे कक्षाध्यापक मुंशी पं. श्रीराम थे। वो बहुत विद्वान थे। बाद में वो अंधे हो गये। हमने बाद में जब मैं कुछ करने लायक हुआ तो उन्हें घर लाकर रखा उनकी सेवा की तथा उनके व्यक्तित्व से अपने परिवारीजनों को भी मिलवाया।

पांचवां पास करने के बाद मैं अपने गांव उसमानपुर आ गया। जहां से आगरा जाकर मैंने मॉडर्न स्कूल से हाईस्कूल किया। इसके बाद इंटरमीडिएट मैंने फिरोजाबाद से किया तथा आगरा कॉलेज से बीएससी किया। इसी समय 1942 आ गया। इस समय जब मैं आगरा कॉलेज से बी.ए. कर चुका था तभी एक दिन छात्रों के टोल के साथ पुलिस ने मुझे भी गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। आगरा के जिला कारागार में चार माह तक की सजा काटने के बाद मैं गांव लौटा। इस समय मेरे मन में आया कि अब क्या करेंगे? इसके जवाब में एक विचार उभरा कि उसमानपुर में तो पढ़ाई का कार्य हो नहीं सकता तो क्यों न बाह जाकर ही कोई स्कूल खोला जाये। यहां कोई अंग्रेजी स्कूल भी नहीं है। इसी विचार को अंतरात्मा के निर्देश की भांति मानकर बाह आ गया।

मैं बाह आया। हफ्ते–20 दिन खेत–खलिहान मित्रों के साथ कट गये। इसके बाद 28 दिसम्बर 1942 में अपने एक मित्र के यहां विद्यालय खोल दिया। यह स्कूल मेरे घ्ज्ञर के पास ही था तथा कस्बे के मध्य स्थित था। जून तक यहां शिक्षण कार्य चला। जुलाई माह में कस्बा के माथुर वैश्यों ने स्टेशन रोड स्थित बिल्डिंग को विद्यालय चलाने के लिए लालजी से मांग लिया। उन्होंने राजी–बाजी, हंसी–खुशी के साथ मेरे उत्सावर्धन के लिए अपनी स्टेशन बिल्डिंग मुझे सौंप दी।

स्टेशन बिल्डिंग बड़ी लम्बी, चौंडी इमारत थी। मैंने बाह के ही कुछ पढ़े लिखे लड़कों को यहां शिक्षक बनाया। मेरा गणित, अंग्रेजी विषय अच्छा था। अपने साथ के लिए तैयार किये शिक्षक लड़कों को मैंने व्यवस्था पहले ही समझा दी थी कि फीस एकत्रित करो। विद्यालय का खर्चा काटकर शेष को अपने वेतन बतौर बांट लो। मेरे लिए किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। मेरा पूरा खर्चा मामा के यहां से चलता था। खाना मैं घर खाता था। कपड़े–लत्ते मामा के बच्चों के लिए बनते थे तो हमारे लिए भी बन जाते थे।

विद्यालय में कक्षा 3 से प्रारम्भ होकर कक्षा 10 की पढ़ाई प्रारम्भ हो गई। छात्र संख्या भी ठीक थी। बाह में अंग्रेजी स्कूल, मेरे स्कल के अलावा कहीं नहीं था। मेरे स्कूल के खुलने से जहां कस्बे के कई लोग खुश थे। ज्यादातर लोग उत्साहित करते थे मगर जो कुछ लोग चालाक और पढ़े लिखे थे यानी कि वकील लोग मेरे इस विद्यालय का मजाक बनाया करते थे। वे कहते थे

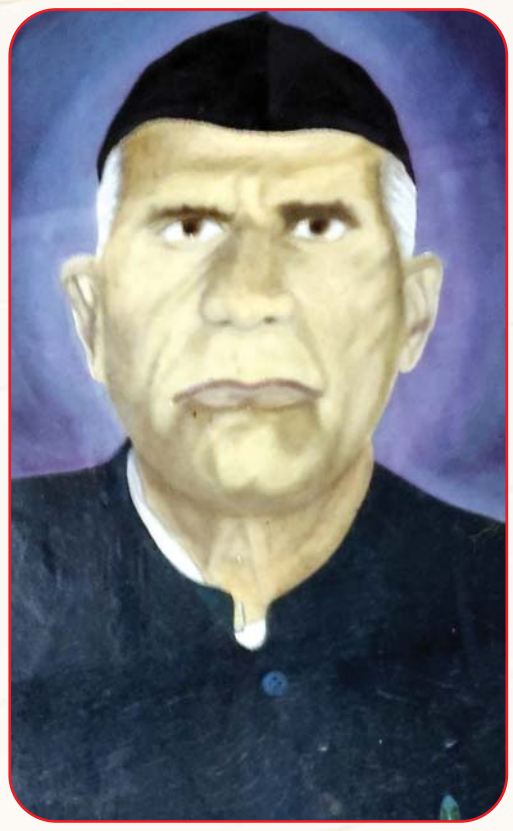

ऐसे कहीं स्कूल चलते हैं। मगर मैं इस तरह की बातो से अपने आप में और मजबूती महसूस करता था। विद्यालय ही मेरे लिए कायर्यक्रम था और मेरे लिए बाद में यह कार्यक्रम ही शिक्षा का रूप बनी। पहली साल कक्षा 10 के प्राइवेट तौर पर 10 छात्र बिइाये और उनमें से 9 छात्र पास हो गये। यही जादू हो गया। इसके बाद तो विद्यालय में छात्र संख्या की कमी नहीं दिखी।

विद्यालय की व्यवस्था पहले से ही अपने साथियों को समझा रखी थी। विद्यालय की प्रसिद्धि से चारों तरफ नाम हो रहा थो। विद्यालय में बड़े–बड़े अधिकारी लोग आते–जाते थे। गुलामी का समय था। 1944–43–42 आये गये। इस दौर में कई तरीके से विभिन्न लोगों ने विद्यालय को सरकारी मान्यता लेने की बात कही। इसी दौरान एक दिन आगरा जिले के इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स श्री नरायन चतुर्वेदी बाह आये। उन्होंने डाक बंगले पर अर्दली के द्वारा मुझे बुलया और कहा अपने विद्यालय को मान्यता क्यां नहीं दिलवाते। उन्होंने मेरे विद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा लाओ प्रार्थना पत्र दे दो मैं आज ही इसे सरकारी बना देता हूं। इस पर मैंने श्री चतुर्वेदी को बताया कि यह विद्यालय स्वतंत्रता से पूर्व सरकारी मान्यता नहीं लेगा। हम स्वतंत्रता के बाद ही इस विद्यालय को सरकारी सूची में दर्ज करायेंगे। उन्होंने बहुत समझाया, कई आकर्षक धमकियां भी दीं। मगर हम टस से मस नहीं हुये।

इंग्लिस पब्लिक स्कूल को हमने भदावर स्कूल का नाम दिया। इस स्कूल में कई क्लब अलग–अलग खोले इसी क्लब में से एक क्लब था सांस्कृतिक क्लब जिसकी टोली गांव–गांव जाकर जागृति लाने का काम करती थी। लोगों को, ग्रामीणों को उनके अधिकारों, मानवाधिकारों के बारे में अवगत कराया जाता था। विद्यालय की इन सांस्कृतिक गतिविधियों को लेकर एक मिश्रा नामक शिक्षा विभाग के अधिकारी ने सरकार को लिखकर भेजा कि भदावर सांस्कृतिक दल गांव–गांव जाकर सरकार के विरुद्ध लोगों को भड़काता है तथा स्वतंत्रता आंदोलन में घी डालने का काम कर रहा है। विद्यालय से पढ़कर निकले कुछ छात्र भी विद्यालय आते थे। नये विद्यार्थियों को अपने कठिन समय की यादें–अनुभव बताते थे कि इस विद्यालय ने बहुत से लोगों का जीवन बनाया।

1947 आया। देश आजाद हुआ। हमने भी अपने विद्यालय सरकारी मान्यता से जोड़ा। कक्षा 10 की भी मान्यता जल्दी मिल गयी। मैं अप्रशिक्षित था। मुझे एलटी के लिए चुन लिया गया। मैं बनारस एलटी करेन गया तो मेरे मन में एम.एड. करने की इच्छा हुई और बनारस विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर एम.एड. करने लगा। इस सफर के दौरान ही 1945 में मेरी शादी हो गयी। जिसकी 52वीं सालगिरह मना चुका हूं।

(साइड बी)

बनारस विश्वविद्यालय के कनवोकेशन में जब मुझे डिग्री मिलनी थी तब मैं अपनी नानी को इलाहाबाद ले गया। इलाहाबाद में मैंने नानी को रिक्शा में तो कभी अपने कंधे पर मंदिरों दर मंदिरों घुमाया। उन्हें भारद्वाज मंदिर, जो सनातन धर्म का प्रमुख प्रचार केंद्र है, को दिखाया। नेहरू म्यूजियम दिखाया।

नानी में ताकत नहीं थी। यही स्थिति थी जो आज मेरी है। समझ नहीं पाता था कि नानी क्यूं कमजोर हैं। घूम तो मैं इलाहाबाद और बनारस रहा था मगर मुझे विद्यालय की फिक्र थी।

विद्यालय को मैंने? वैज्ञानिक, समाजवादी, गांधीवादी तरीके से चलाया था। घर का नहीं, कुटुम्ब का नहीं, केवल मैं विद्यालय के लिए समर्पित था। विद्यालय को कार्याक्रमों, योजनाओं और आयोजनों के बल पर चला रहा था। विद्यालय में कभी सहकारी बाजार, गांधी मेला, किसान मेला विद्यार्थियों के द्वारा चलाये गये और लगाये जाते थे। अर्थशास्त्र के अध्यापक रामनाथ सिंह से विद्यालय को 'अपना रोजगार हो' के सिद्धांत पर ईंट का कारखाना चलवाया जिसने विद्यालय को बढ़ाने में बड़ा सहयोग दिया। लोग आश्चय चकित थे। विद्यालय में एक्टिविटी का दिन प्रत्येक दिन होता था। कभी हिन्दी दिवस, गांधी जयंती, तिलक दिवस, विधान दिवस, विधान का संविधान का क्लब , हमारे विद्यालय में प्रारम्भ से ही कई क्लब गठित थे। गणित, पेंटिंग, साइकिल, फोटो, ड्रेमेटिक क्लब तथा सांस्कृति कल्ब भदावर कॉलेज का नाम तो सरकार के दौरान से चर्चित था।

सरकार उस समय की सचेत थी। क्लब की गतिविधियों पर नजर रखी जाती थी। एक नयी चेतना लोगों में फैलाने का कार्य हो रहा था। उस समय के तत्कालीन इंन्सपेक्टर ने सरकार को रिपोर्ट भेजी थी जिसमें सांस्कृतिक क्लब भदावर कॉलेज को सरकार के विरुद्ध चेतना पैदा कराने का कारक बताया था। मिश्रा ने लिख था कि सांस्कृतिक क्लब भदावर कालेज की क्रिया कलापों से अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लोगों के अंदर भावनायें भड़काने के काम से अंग्रेजों सरकार को कभी भी खतरा हो सकता है।

मैं विद्यालय को विज्ञान का स्कूल बनाना चाहता था। जायदार गिरवी रखकर धन उधार लिया। विद्यालय के लिए विज्ञान का

सामान लाया। मानव स्वभाव का पूरा सहयोग नहीं मिला जिससे आज वह इंटर कॉलेज गणित का स्कूल है। इस विद्यालय में बृज भूषण शर्मा जैसे विद्वान गणित के शिक्षक हैं कोई नये तिवारी जी आ गये हैं। विज्ञान का विद्यालय चलाने का सोचा था। आज भी इस विद्यालय का प्रिंसिपल फिजिक्स का एम.एस–सी है।

विद्यालय में कई सथी थे। रामनाथ सिंह, लक्ष्मी प्रसाद गर्ग, दीनदयाल शास्त्री और रामगोपाल दिनेश जिनका जिकर मैंने पहले नहीं किया। पहली बार कर रहा हूं। दिनेश जी से स्टेशन के दिनों से मेरा साथ था। वह साहित्य में अभिरुचि स्टेशन के समय से ही रखते थे। उनकी साहित्य अभिरुचि से हमारे यहां आने वाले आगन्तुकों को दिनेश प्रभावि तकर वाहवाही खूब पाते और दिलाते थे।

श्री दिनेश ने इस विद्यालय से प्राइवेट तौर पर पढ़कर एम.ए. किया। पी.एच–डी किया। आगरा विश्वविदद्यालय से अपने श्रम के बल पर पी.एच–डी करने के बाद वह राजस्थान में सरकारी शिक्षक हो गये और वो हमारे साथ से दूर चले गये। बाह छूट गया। श्री दिनेश जी उदयपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। श्री दिनेश जी उदयपुर में टियर हो गये हैं। अब वो दिल्ली में अपने एकमात्र पु इंजीनियर के पास रहते बताये जाते हैं। श्री दिनेश जी की लड़की उनके स्थान पर अब वहां उदयपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी की प्रवक्ता है। वह अपने चिकित्सक पति के साथ दिनेश जी की बनायी कोठी में ही उदयपुर में रहती हैं। श्री दिनेश जी हिन्दी के विद्वान थे। वे मारीशस भी हिन्दी सम्मेलन में गये।

हमारा विद्यालय कार्यक्रमों के आधार पर ही चलता था। मेरी नजर में कार्यक्रम ही शिक्षा है। हम अपने विद्यालय में सभी को शिक्षा दे और दिला सकते हैं। मेरे विद्यालय में बाहरी सामान्य ज्ञान की शिक्षा भी हम वक्त–वक्त पर विद्यालय परिसर में संयुक्त राष्ट्रदिवस, मानवाधिकार दिवस मना कर शिक्षा देते। विश्व की महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालने वाले कार्यक्रमों के आयोजन कराना मेरी शिक्षा प्रसार का माध्यम होते थे तथा यही मेरी कोशिश होती थी। इस विद्यालय को सन् 1964 में डिग्री कॉलेज बनाने की मन में आई। विद्यालय में कई अध्यापक ऐसे थे जो अपने विषय में पूर्ण रूप से पारंगत थे। डी.डी आचार्य संस्कृत में, मैं एजूकेशन तथा कई विद्वान हिन्दी के भी थे। अर्थशास्त्र में खूब सिंह चौहान पी.एच–डी कर चुके थे।

बस क्या था डिग्री कॉलेज बनाने की मन में आयी। एक शिक्षक लक्ष्मी नारायण शर्मा को प्रार्थना पत्र देकर डिग्री कॉलेज के आवेदन शुल्क सहित आगरा भेज दिया गया। प्रार्थना पत्र देने के बाद इस फाइल को आगे बढ़ाया गया। प्रार्थना पत्र पर विश्वविद्यालय की तरफ से तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल पैनल के लिए आया जिसमें तत्कालीन समय के एक प्रसिद्ध विद्यालय के प्राचार्य श्री जोशी, जो स्वयं एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थे। आगरा कॉलेज के अंग्रेजी विभाग के विद्वान भी आये थे। प्रार्थना पत्र के अनुसार पात्रता उचित पायी गयी। इसके बाद मान्यता प्राप्त करने के लिए चला शर्तों दर शर्तों का दौर इसी योजना के तहत पता चला कि नगद पैसा जमा कराना होगा। यही व्यवस्था टेढ़ी थी। अन्य शर्तें पूरी करते गये। नगद धन भदावर ईंट उद्योग से प्रापत कर विश्वविद्यालय की बैंक इलाहाबाद बैंक की शाखा में जमा करा दिया गया। उस समय विश्वविद्यालय के वी.सी. गुप्ता थे।

हमारे इस कार्यक्रम को हमारे ही प्रोजेक्ट अर्थशास्त्र के बल से संचालित भदावर ईंट उद्योग से ही सफलता मिली डिग्री कॉलेज बन गया। बड़े खुश थे हम सभी। एक सितम्बर 69 को विद्यालय डिग्री कॉलेज बन गया। मुझसे कहा गया कि मैं प्राचार्य का पद सम्हालूं। मैंने इंटर कॉलेज की जिम्मेवारी पं. श्रीराम भारद्वाज को सौंपी और मैं डिग्री कॉलेज का कार्य करने लगा। अब मैं वेतन डिग्री कॉलेज से लेता था। बड़ा उत्साह था, बड़ा जोश था। डिग्री कॉलेज में पढ़ाने के लिए हमारे कई शिक्षक पहले से ही पारंगत थे। राजनति शास्त्र में महेंद्र सिंह भदौरिया, संस्कृत में डी.डी. आचार्य जैसे विद्वान थे। हिन्दी विषय के शिक्षक भी हमारे पास थे ही, अंग्रेजी विषय के लिए फिरोजाबाद से आर.के. श्रीवास्तव को लाया गया। और विद्यालय चल निकला। हमने कुल छह विषय ही यि थे। विद्यालय को डिग्री का सेंटर भी बन गया।

मैंने इस विद्यालय को भी क्रियाकलापों, योजनाओं के सहारे चलाया। विद्यालय में विद्यार्थियों को संतुष्ट करता था। संस्कृ?त विषय के डी.डी. आचार्य, हिन्दी पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ने तथा शिक्षाशास्त्र मैंने पढ़ाना आरम्भ किया। इंग्लि के लिए फिरोजाबाद से एक सज्जन व योग्य आर.के. श्रीवास्तव को बुला लिया गया। इस विद्यालय में बड़े छात्र आते थे तथा यहां उच्च शिक्षा को देना था। बड़े अच्छे कार्यक्रम बनाये और काये गये। मुझे तो कॉलेज के लिए अच्छा संसाधन देन, सरल–विलासी नहीं और शिक्षा का कार्यक्रम समुचित चले मेरी यही रुचि थी, लगा रहा।

85 में मैंने 60 वर्ष पूरे किये। मैं सोचता था ये मैंने जो किया था वह मेरे ऊपर इस कदर हावी है कि मुझे कुछ और सूझता ही नहीं था। मैंने इस समय तक किसी और के बारे में सोचा ही नहीं।

बहरहाल 85 ने मुझे बड़ी राहत दी। क्योंकि अब मैं 60 वर्ष का पूरा हो चुका था। बुढ़ापा प्रारम्भ हो चला था। अब गृहस्थी सामने आयी और वह बच्चे जो हम लोगों के साथ इस बीच आ गये थे।

उनको मैंने रूसों की स्वतंत्र विकास पद्धति पर स्वतंत्र डछोड़ दिया था। सबसे बड़े बच्चे ने अपने आपको अच्छा विकसित किया। बड़ा बच्चा फीमेल चाइल्ड था। इसने एम.ए. किया और अपने को योग्य सिद्ध किया।

यदि ये चाहती तो कैरियर के लिए दूसरी लाइफ चुन सकती थी। ये पी.सी.एस., आई.ए.एस, प्रोफेसर, प्रिंसिपल बन सकती थी। दूसरा बड़ा मेल चाइल्ड आम जनता के साथ रहा। वह भी एक अच्छी बात है, आम जनता के साथ होना।

आज की शिक्षा दो भागों में बंटी है। आम लोगों की शिक्षा और विशिष्ट लोगों की शिक्षा। उन्होंने आम जनता की शिक्षा को ज्यादा ग्रहण किया। विशिष्ट लोगों की शिक्षा से तो केवल वह इंटरमीडियेट की शिक्षा तक ही जुड़ सके। रसियन भी पढ़ी लेकिन एल्कोहल का शौक लग गया जो अब भी है जो शायद छूटे या न छूटे पता नहीं। बहरहाल वह आम लोगों के बीच हैं, गरीब हैं।

उने बाद वाला बालक है वह पूर्ण रूप से आम जनता का आदमी है वह अपने आपको टैक्निशियन बताते हैं किसी फैक्ट्री में कार्य कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

तीसरे पुत्र अखबार में....।

उक्त वृतांत सुमन बहनजी के घर मौत से दो माह पूर्व यानी फरवरी 17 में उन्होंने टेप रिकॉर्ड स्वयं चलाना सीख रिकार्ड किया था। जिसे अक्षरशः प्रकाशन उपदेश तिवारी उनके नाती के साथ बैठ लिखवा कर पुस्तिका में कराया।

विमेंस टी20 वर्ल्ड कप

मूनी का तूफानी अर्धशतक, वेस्टइंडीज को 8 विकेट से रौंदकर फाइनल में ऑस्ट्रेलिया

एजेंसी, लंदन।

विमेंस टी20 वर्ल्ड कप 2026 के सेमीफाइनल-1 में ऑस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज के खिलाफ 8 विकेट से जीत दर्ज की। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने 8वीं बार खिताबी मुकाबले में जगह बना ली है, जहां रविवार को उसका सामना सेमीफाइनल-2 की विजेता से होगा। मंगलवार को केनिंग्टन ओवल में खेले गए मुकाबले में टॉस गंवाकर बल्लेबाजी के लिए उतरी वेस्टइंडीज की टीम ने 7 विकेट खोकर सिर्फ 125 रन बनाए। कप्तान हेली मैथ्यूज ने किआना जोसेफ (16) के साथ पहले विकेट के लिए 49 गेंदों में 47 रन जुटाए। मैथ्यूज 28 गेंदों में 5 चौकों के साथ 30 रन बनाकर पवेलियन लौटीं, जिसके बाद शेमेन कैंपबेल बल्लेबाजी के लिए उतरीं, लेकिन दूसरे छोर पर किसी ने उनका साथ नहीं दिया। कैंपबेल ने छोटी-छोटी साझेदारियां करते हुए टीम को 15.3 ओवरों में 83/6 के स्कोर तक पहुंचाया।

कैंपबेल 25 गेंदों में 3 चौकों के साथ 22 रन बनाकर पवेलियन लौटीं। यहां से डिएंड्रा डॉटिन ने जनिलेया ग्लासगो के साथ सातवें विकेट के लिए 27 गेंदों में 42 रन की साझेदारी करते हुए टीम को 125/7 के स्कोर तक पहुंचाया। ग्लासगो ने 15 रन की पारी खेली, जबकि डॉटिन 16 गेंदों में 4 चौकों के साथ 26 रन बनाकर नाबाद रहीं। मैच शुरू होने से पहले डिएंड्रा साथी खिलाड़ियों की मदद से मैदान से बाहर जाती नजर आई थीं। करीब 30 मिनट मेडिकल रूप में उनका उपचार हुआ, जिसके बाद वह आठवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरी थीं।

विपक्षी खेमे से सोफी मोलिनक्स, एशले गार्डनर और जॉर्जिया वेयरहैम को 2-2 विकेट हाथ लगे, जबकि एनाबेल सदरलैंड ने 1 विकेट हासिल किया।

इसके जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने 13 ओवरों में जीत हासिल कर ली। जॉर्जिया वोल ने बेथ मूनी के साथ पहले विकेट के लिए 29 रन जुटाए। जॉर्जिया 11 गेंदों में 3 बाउंड्री के साथ 16 रन बनाकर आउट हुईं, जिसके बाद टीम ने 43 के स्कोर पर फोएबे लिचफील्ड (4) का विकेट भी गंवा दिया।

यहां से बेथ मूनी ने एलिस पेरी के साथ 21 रन की साझेदारी की। पेरी (2) रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटीं, जिसके बाद मूनी ने एश्ले गार्डनर के साथ 36 गेंदों में 63 रन की अटूट साझेदारी करते हुए टीम को आसान जीत दिलाई। मूनी 36 गेंदों में 8 चौकों के साथ 61 रन बनाकर नाबाद रहीं। गार्डनर ने 20 गेंदों में 5 बाउंड्री के साथ नाबाद 35 रन बनाए। वेस्टइंडीज की तरफ से चिनेल हेनरी और हेली मैथ्यूज ने 1-1 विकेट अपने नाम किया।

नेपालः भारतीय दूतावास ने किया क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

काठमांडू। नेपाल में भारतीय दूतावास ने 26-28 जून तक काठमांडू में भारतीय दूतावास क्रिकेट टूर्नामेंट के दूसरा संस्करण का आयोजन किया। इसमें राजनयिक, सरकारी अधिकारी, मीडियाकर्मी, पुराने क्रिकेटर, उद्योग क्षेत्र के प्रतिनिधि और देश में रहने वाले भारतीय डायस्पोरा के सदस्य शामिल हुए। दूतावास ने मंगलवार को इसकी जानकारी दी। तीन दिन के इस टूर्नामेंट में नेपाल में भारतीय दूतावास, नेपाल के विदेश मंत्रालय, काठमांडू में राजनयिक समुदाय, नेपाली मीडिया, पुराने नेपाली क्रिकेटर, नेपाल सरकार के अधिकारी, औद्योगिक संस्थान और नेपाल में भारतीय समुदाय की आठ टीमों ने हिस्सा लिया। कई कड़े मैचों के बाद, 28 जून को भारतीय दूतावास और भारतीय समुदाय के बीच हुए फाइनल के साथ खत्म हुआ। मैच के बाद, नेपाल में भारत के राजदूत, नवीन श्रीवास्तव और आयोजन साझेदार के प्रतिनिधि ने जीतने वाली टीम और शानदार प्रदर्शन करने वालों को ट्रॉफी और अवॉर्ड दिए।

आज की बात

शंकर देव तिवारी

वैभव खेला तो और रिकॉर्ड टूटेंगे, पुरोधाओं को डर

प्रतिभा उम्र की मोहताज नहीं होती, फिर भी चयन में बंद दरवाजों के पीछे की असल कहानी यही है कि कोई भी स्थापित व्यवस्था अपने शीर्ष स्तंभों को इतनी जल्दी हिलते हुए नहीं देखना चाहती? वैभव का बाहर बैठना इस बात का प्रमाण है कि क्रिकेट में 'योग्यता' से ज्यादा 'चयन की राजनीति' भारी पड़ रही है? वैभव सूर्यवंशी को भारतीय प्लेइंग-कमें मौका न मिलने के पीछे एक दबी-छिपी चिंता क्रिकेट के पुरोधाओं के रिकॉर्ड के टूटने की भी है? महज 15 साल की उम्र में इस बिहारी सितारे ने ब्रैडमैन और गेल जैसे दिग्गजों को भी पीछे छोड़ दिया है? यदि वह लगातार खेलते हैं, तो क्रिकेट के भगवान का रुतबा भी दांव पर लग सकता है?वैभव का न खिलनाः कीर्तिमानों का भय और दिल्ली-मुंबई की लॉबीक्रिकेट का इतिहास हमेशा शानदार रहा है, लेकिन जब कोई 'अंडरडॉग' (कमजोर या नए क्षेत्र से आया खिलाड़ी) दिग्गजों के दशकों पुराने रिकॉर्ड्स को पल भर में ध्वस्त कर देता है, तो स्थापित लॉबी में बेचैनी स्वाभाविक है? वैभव सूर्यवंशी ने अंतरराष्ट्रीय और घरेलू स्तर पर जो तांडव मचाया है, उसने बड़े-बड़े धुरंधरों को सकते में डाल दिया है?दिग्गजों के सिंहासन पर खतराः ब्रैडमैन की औसत हो या क्रिस गेल के सबसे तेज शतक या सबसे अधिक छक्कों का रिकॉर्ड—वैभव ने अपनी 11 गेंदों में अर्धशतक जैसी पारियों से सभी को बौना साबित कर दिया है? ऐसे में, यदि इस 15 वर्षीय बालक को लगातार खेलने दिया गया, तो 'क्रिकेट के भगवान' के रूप में स्थापित छवि और उनके अटूट रिकॉर्ड्स का किला भी दरक सकता है?मुंबई बनाम दिल्ली, अब बिहार बनाम 'कौन?': भारतीय क्रिकेट का पावर-सेंटर (सत्ता केंद्र) हमेशा से मुंबई और दिल्ली के इर्द-गिर्द घूमता रहा है? इन महानगरों की लॉबी का प्रभाव चयन से लेकर मीडिया तक साफ झलकता है? अब प्रश्न यह उठ रहा है कि क्या बिहार की माटी से उपजा यह 'बिहारी लाल' अपनी प्रतिभा के दम पर इस वर्चस्व को तोड़ देगा? यह संघर्ष अब सिर्फ मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यवस्था और प्रतिभा के बीच का एक छिपा हुआ युद्ध बन गया है?

मनोरंजन

पूर्व शेफ ने काइली जेनर पर लगाए गंभीर आरोप, दर्ज हुआ मुकदमा

मॉडल, बिजनेस वुमन काइली जेनर का मुश्किल वक्त चल रहा है। पहले उनके दो स्टाफ मेंबर्स ने काम के दौरान गलत बर्ताव को लेकर काइली पर मुकदमा दर्ज करवाया था। अब पूर्व शेफ ने भी आरोप लगाया है कि काइली के एक इवेंट के दौरान उससे मुश्किल स्थितियों में काम करवाया गया, जिससे गर्भपात हो गया। इस पूर्व शेफ ने भी अब काइली पर मुकदमा दर्ज करवाया है।

काम के दौरान परेशान किया गया

पीपल्स मैगजीन के मुताबिक लॉस एंजिल्स की एक कोर्ट में 22 जून को दायर दस्तावेजों के हिसाब से काइली जेनर पर पूर्व शेफ ने गंभीर आरोप लगाए हैं। उसके अनुसार काइली के सुपरवाइजर्स को अपनी हाई-रिस्क प्रेग्नेंसी के बारे में बताने के बावजूद उससे लंबे समय तक और शारीरिक रूप से मुश्किल काम करवाए गए। इस मामले पर काइली जेनर या उनके किसी प्रतिनिधि की अभी तक टिप्पणी नहीं आई है।

खराब स्थिति में काम करने के कारण हुआ मिसकैरिज

शिकायत करने वाली महिला और पूर्व शेफ ने दावा किया कि उसने नवंबर 2024 में काइली जेनर के लिए काम करना शुरू किया। उस दौरान प्रेग्नेंसी से जुड़ी कुछ सुविधाओं की मांग की। हालांकि पूर्व शेफ ने आरोप लगाया कि दिसंबर में उससे भारी सामान ढलान से ऊपर लेकर जाने का कहा गया, जिससे उसे मेडिकल इमरजेंसी का सामना करना पड़ा। मुकदमे में यह भी आरोप लगाया गया है कि 1 फरवरी 2025 को काइली जेनर के एक बच्चे की बर्थडे पार्टी में काम करने के दौरान शेफ को किसी तरह की मदद नहीं दी गई। इससे अगली सुबह शेफ को बहुत ज्यादा ब्लीडिंग हुई और बाद में पता चला कि उसका मिसकैरिज हो गया है।

क्या है पूर्व शेफ की मांग?

पूर्व शेफ मुआवजे के तौर पर बची हुई सैलरी और नौकरी से जुड़े फायदों की मांग कर रही है। वकील ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि इस मुकदमे से ऐसी ही कंडीशन का सामना कर रहे दूसरे कर्मचारियों को भी आगे आने की हिम्मत मिलेगी।

आकांक्षा रंजन का अनप्रिडिक्टेबल खेल जारी, 'इक्का' के साथ फिर करेगी सरप्राइज

आकांक्षा रंजन अब साफ तौर पर ये साबित कर रही हैं कि उन्हें अपने रोल्स के साथ एक्सपेरिमेंट करने से जरा भी डर नहीं लगता। हर नए प्रोजेक्ट के साथ वो कुछ ऐसा लेकर आती हैं जो उनके पिछले किरदार से बिल्कुल अलग होता है। इसी के चलते उनकी फिल्मोग्राफी अब एकदम रंग-बिरंगी और वर्सेटाइल बनती जा रही है।

हाल ही में 'ग्राम चिकित्सालय सीजन 2' में उन्होंने एक दिल छू लेने वाली, दयालु गांव की डॉक्टर – डॉ. गर्गी – का किरदार निभाकर खूब तारीफें बटोरी हैं। और अब आकांक्षा तैयार हैं दर्शकों को एकदम नया झटका देने के लिए, अपने आने वाले लीगल थ्रिलर 'इक्का' में। गांव की सादगी छोड़कर इस बार वो कोर्टरूम की तेज-तर्रार दुनिया में एंट्री ले रही हैं, जहां वो एक मॉडर्न यंग वुमन के किरदार में नजर आएंगी – जो उनके काम में एक और नया तड़का जोड़ता है।

आज रिलीज हुआ 'इक्का' का ट्रेलर इस इंटेंस कहानी की एक झलक देता है। एक दमदार कोर्टरूम ड्रामा के बैकड्रॉप पर बनी ये कहानी एक मशहूर वकील के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे एक मर्डर के आरोपी का केस लड़ना पड़ता है। हालांकि आकांक्षा के किरदार को लेकर मेकर्स ने अभी ज्यादा खुलासा नहीं किया है, लेकिन ट्रेलर ये इशारा जरूर करता है कि उनकी भूमिका कहानी में खास अहमियत रखती है।

इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने को लेकर आकांक्षा कहती हैं, 'मेरे लिए सबसे ज्यादा मायने रखता है कि मैं अपने किरदार के जरिए क्या इम्पैक्ट ला सकती हूं। मैं काफी एक्साइटेड हूं कि अब दर्शक 'इक्का' की दुनिया की पहली झलक ट्रेलर के जरिए देख पाएंगे। मैंने पहले भी कहा है कि थ्रिलर मेरा पसंदीदा जॉनर है, तो ऐसे प्रोजेक्ट का हिस्सा बनना मेरे लिए और भी रोमांचक था। मेकर्स की सोच और जिस तरह से स्क्रिप्ट मुझे सुनाई गई, उसने मुझे और भी खींच लिया। उनके विजन में एकदम क्लैरिटी थी, और वही चीज मेरे साथ रह गई।'

पिछले कुछ सालों में आकांक्षा ने जानबूझकर अलग-अलग जॉनर के प्रोजेक्ट्स चुने हैं। 'गिल्टी' और 'मोनिका, ओ माय डार्लिंग' में अपने दमदार परफॉर्मेंस से उन्होंने गहरी छाप छोड़ी, और फिर 'ग्राम चिकित्सालय' में डॉ. गर्गी बनकर अपना एक अलग ही सॉफ्ट और इमोशनल साइड दिखाया। अब 'इक्का' के साथ वो फिर एक नए स्पेस में कदम रख रही हैं – इस बार कहानी ज्यादा डार्क और लेयर्ड है। वर्क फ्रंट की बात करें तो, इस समय 'ग्राम चिकित्सालय सीजन 2' में अपने परफॉर्मेंस के लिए सराहना बटोर रहीं आकांक्षा जल्द ही 'इक्का' में नजर आएंगी, जिसके बाद उनके पास कई और दिलचस्प प्रोजेक्ट्स लाइन में हैं – जिनका खुलासा अभी बाकी है।

मैंने कभी खुद को शर्मिला टैगोर का दामाद समझकर इंडस्ट्री में काम नहीं किया : कुणाल

अभिनेता और फिल्ममेकर कुणाल खेमू इन दिनों अपने नए रियलिटी शो 'अलायंस' को लेकर चर्चा में हैं। कुणाल ने हाल ही में उस सवाल का जवाब दिया, जो अक्सर उनसे पूछा जाता है। भारतीय सिनेमा के सबसे प्रतिष्ठित परिवारों में से एक का हिस्सा बनने के बाद क्या उन्हें कभी किसी तरह का दबाव या उम्मीदों का बोझ महसूस हुआ? इस पर कुणाल ने कहा कि उन्होंने कभी भी निजी रिश्तों को अपने काम और कला के बीच नहीं आने दिया। आईएएनएस से खास बातचीत में सवाल का जवाब देते हुए कुणाल ने कहा, "नहीं, मेरे लिए मेरी कला और मेरे भीतर का कलाकार सबसे ज्यादा मायने रखता है। यही मेरे लिए सबसे अहम है। सच कहूं तो मैंने कभी इस नजरिए से सोचा ही नहीं कि मैं शर्मिला टैगोर का दामाद हूं।" अगर मैं यह कहूं कि मैं इस बारे में सोचता हूं या इससे बचने की कोशिश करता हूं, तो यह झूठ होगा। यह बात मेरे दिमाग में रहती ही नहीं है।" अभिनेता ने आगे कहा, "मेरी क्रिएटिव जर्नी हमेशा एक्टिंग और फिल्ममेकिंग के प्रति मेरे पैशन से प्रेरित रही है। मैंने कभी इस बात को महत्व नहीं दिया कि मैं किस परिवार का हिस्सा हूं। किसी कलाकार की असली पहचान उसके काम से बनती है, न कि उसके पारिवारिक रिश्तों से।"

बता दें कि कुणाल खेमू ने अभिनेत्री सोहा अली खान से 25 जनवरी 2015 को शादी की थी। सोहा अली खान, दिग्गज अभिनेत्री शर्मिला टैगोर और दिवंगत क्रिकेटर मंसूर अली खान पटौदी की बेटी हैं। कुणाल और सोहा की पहली मुलाकात साल 2009 में फिल्म 'ढूंढते रह जाओगे' के सेट पर हुई थी। वहीं से दोनों की दोस्ती शुरू हुई, जो बाद में प्यार में बदल गई। शादी के दो साल बाद, सितंबर 2017 में दोनों ने अपनी बेटी इनाया नौमी खेमू का स्वागत किया। दोनों अक्सर अपनी बेटी के साथ बिताए खास पलों की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर साझा करते रहते हैं, जिन्हें फैंस भी काफी पसंद करते हैं।

बॉलीवुड में काम करना चाहती हैं मिली बॉबी ब्राउन

हॉलीवुड एक्ट्रेस मिली बॉबी ब्राउन इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म 'एनोला होम्स 3' के प्रमोशन में व्यस्त हैं। इस फिल्म में वह एक बार फिर मशहूर यंग डिटेक्टिव के किरदार में नजर आएंगी। फिल्म में एक्शन, रोमांस, ड्रामा और कॉमेडी सब कुछ है, और इसी वजह से मिली को लगता है कि वह हिंदी फिल्मों के लिए भी परफेक्ट हैं।

हाल ही में वैरायटी इंडिया को दिए इंटरव्यू में मिली ने बॉलीवुड फिल्म में काम करने की इच्छा जाहिर की। उन्होंने कहा, 'बिल्कुल, मैं कभी मना नहीं करूंगी। इंडिया मेरी बकेट लिस्ट में है। मैं वहां जाना चाहती हूं। मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूं, खासकर कॉमेडीड्ब क्योंकि मैं एक फनी गर्ल हूं।'

जब उनसे पूछा गया कि क्या वह हिंदी फिल्मों में डांस करने के लिए तैयार होंगी, तो उन्होंने तुरंत हां कहा। उन्होंने खुशी-खुशी बताया, 'मुझे डांस करना बहुत पसंद है।' मिली ने बहुत छोटी उम्र में एक्टिंग शुरू कर दी थी और उन्हें असली पहचान नेटफ्लिक्स के शो 'स्ट्रेंजर थिंग्स' से मिली, जिसमें उन्होंने 'इलेवन' का किरदार निभाया। इस रोल के बाद वह दुनिया भर में मशहूर हो गईं। इसके अलावा मिली 'गॉडजिलाः किंग ऑफ द मॉन्सटर्स' और 'गॉडजिला वर्सेस कॉन्ग' जैसी फिल्मों में भी नजर आ चुकी हैं। बाद में उन्होंने 'एनोला होम्स' में लीड रोल निभाया और इस फिल्म की प्रोड्यूसर भी बनीं, जो उनके करियर का एक बड़ा कदम माना जाता है।